# दुर्गा सप्तशती पारायण

## पद्यानुवाद

**ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**

ॐ ऐं १ ४ चा ९ च्चे डा ६ २ ह्रीं
८ वि ७ यै ५ मुण ३ क्लीं

वैद्य फूलचन्द्र शर्मा

# दुर्गा-सप्तशती पारायण

## (पद्यानुवाद)



लेखक

**वैद्य फूलचन्द्र शर्मा**

प्रकाशक

**श्रद्धा आयुर्वेद केन्द्र**

८/४८३, राजीव कोलोनी, गली नं० ६, सुभाष नगर

बरेली २४३००१



प्रथम संस्करण २००९ मूल्य ५०.००

मुद्रक— विशाल कौशिक प्रिन्टर्स, नजदीक जी.टी.बी. हास्पिटल, दिल्ली
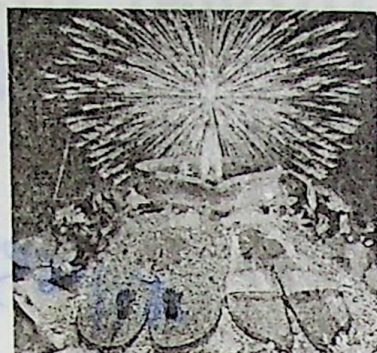
## भावभरी प्रार्थना

प्रेरणा जब हो मातु भवानी। मन मंदिर आवहु वरदानी॥१॥

सप्तशती का करहुँ अनुवादा। बिना कृपा निवहै कस वादा॥२॥

दो विवेक प्रभु गणपति देवा। नित उहि भजहुँ करहुँ तव सेवा॥३॥

ज्ञान शारदा माँ तुम देना। अश्रुपूर्ण मय दोऊ नयना॥४॥

गुरु श्रीराम प्रज्ञा के दाता। ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति प्रदाता॥५॥

मन ही मन सब देव मनावहुँ। दुर्गा माँ तेरे गुणगावहुँ॥६॥

कठिन कार्य को सुगम करो माँ। गंधार्चित स्वीकार करो माँ॥७॥

मैं बालक नादान हूँ, कृपा की करना कोर।

छंदों में अनुवाद है, चरणन देना ठौर॥

♣♣♣

धर्मो रक्षति रक्षितः पंजीयन क्रमांक 1088/87 तमसो मा ज्योतिर्गमय

# ब्रह्ममूर्ति श्री मौजी बाबा लोक कल्याण ट्रस्ट

**श्री मौजी बाबा पावनधाम आश्रम, कोटा (राज.)**

आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80 जी के अन्तर्गत देय भेंट से मुक्त है।
रजि. 806/6/91–92/2474/94

संस्थापक, अध्यक्ष
म.मं. स्वामी रामानन्द सरस्वती
☎ : 09414180490

क्रमांक दिनांक : 15/08/09

## सन्देश

**परम स्नेही आचार्य श्री फूलचन्द्र जी,**

**शुभाशीष!**

आपके द्वारा पूर्व में भी अनेक धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन समाज कल्याण हेतु हो चुका है। उसी शृङ्खला में श्री दुर्गा सप्तशती पारायण नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। देवी की उपासना हर व्यक्ति के लिए परम आवश्यक होती है परन्तु सहज और सरल पुस्तक के अभाव में हर व्यक्ति पूजा, उपासना करने में असमर्थ होता है उसके लिए आपकी यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी साबित होगी। आपके इस प्रकाशन से समाज का हर व्यक्ति लाभान्वित हो ऐसी शुभकामना! आपके मंगलमय जीवन हेतु ईश्वर से प्रार्थना, अस्तु।

॥श्री गोपाल॥ ॥श्री रामजी॥

श्री राम भवन, बिजौलियाँ

राजस्थान-३११६०२

क्रमांक दिनांक : 15/08/09

## सन्देश

वेदमाता गायत्री ऋम्भरा प्रज्ञा का जो वर्णन वेदों में है उसी का ही पौराणिक स्वरूप मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत श्री दुर्गासप्तशती नामक पुस्तक में वर्णित है। गायत्री को त्रिपदा कहा है, यहाँ श्री दुर्गासप्तशती में महामाया, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती चरित्रों द्वारा सारी महाविद्यायें समझाई गई हैं।

इस सप्तशती का भक्ति भाव, शक्ति भाव तथा अर्थ भाव प्रत्येक मनुष्य के लिये उपयोगी है।

उस सप्तशती की काव्य स्वरूप विवेचना श्री फूलचन्द्र जी शर्मा ने की है। इससे पाठक को हर वस्तु समझने में सहजता रहेगी।

मैं इस पुस्तक की उपयोगिता हेतु मंगल कामना करता हूँ।

शुभ

चन्द्रवीर सिंह

**राव सवाई चन्द्रवीरसिंह**

बिजोलियाँ

# भूमिका
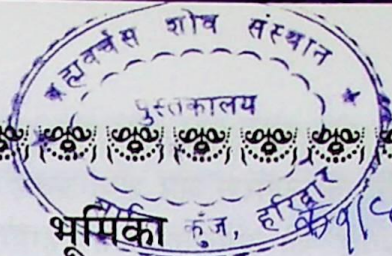
हमारा भारतवर्ष जो प्राचीन काल में आध्यात्म शक्ति के कारण 'जगद्गुरु', राजनैतिक शक्ति की दृष्टि से 'चक्रवर्ती सम्राट्' की उपाधि से सुशोभित था और आर्थिक शक्ति के कारण ही इसे 'सोने की चिड़िया' कहते थे।

यह एक गौरव की बात थी। भारतीय संस्कृति के अनुदानों की गाथा इतिहास के पृष्ठों पर आज भी अंकित है। यह देश तीनों शक्तियों का केन्द्र था। हमारे मनीषी ज्ञान विज्ञान के भण्डार थे। वेद, पुराण, दर्शन, गीता रामायण, महाभारत में शक्ति के अकूत प्रमाण मौजूद हैं।

सृष्टि की रचना हेतु कहानी आती है कि भगवान् विष्णु क्षीरसागर में शेष शैय्या पर लेटे हुए थे तभी उनकी नाभि से कमल की उत्पत्ति हुई और देखते देखते ब्रह्मा जी का प्रादुर्भाव हुआ। आकाशवाणी द्वारा ब्रह्मा को एक हजार वर्ष तक गायत्री महामंत्र जप करने का निर्देश मिला और वे जप ध्यान में लीन हो गये। एक शक्ति उपस्थित हुई जिसे गायत्री शक्ति (सूक्ष्म शक्ति) इसी शक्ति के तीन भाग हुये सत, रज, तम के रूप में इन्हीं को ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीन देवता के नाम से जाना गया। इन्हीं को **ह्रीं, श्रीं, क्लीं,** बीजरूप में शास्त्रों ने स्वीकार किया जिसका वर्णन महासरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली के रूप में दुर्गा सप्तशती में विस्तार पूर्वक दिया गया है।

इन शक्तिप्रवाहों की ध्वनियों के चमत्कार ही संसार को नये नये शोध के आयामों तक पहुँचाते हैं जो विज्ञान की ही मुख्य धारा है। ह्रीं शक्ति से योगी, भक्त, परमार्थपरायण आदि को आत्मिक शक्ति का लाभ प्राप्त होता है। श्रीं— वैभव प्रदान करती है जिसमें व्यवसायी उद्योगपति सुधारक आदि संलग्न हैं। क्लीं—भौतिक विज्ञानी, अन्वेषक अपनी खोजों से आज आगे बढ़ रहे हैं। प्राचीन काल में योगी कुण्डलिनी शक्ति (क्लीं) का उच्चस्तरीय लाभ उठाते थे।

उक्त शक्ति के जागरण और शब्द प्रवाह हेतु सूक्ष्म ब्रह्म ऊँकार की ध्वनि के प्रवाह को समझना होगा। हमारे ऋषि मुनि शक्ति केन्द्रों, षट्चक्रों, ग्रन्थियों, मातृकाओं भ्रमरों को जगाते थे। इनकी जागृति से जो शक्ति पैदी होती थी, उसका उपयोग लोकमंगल के कार्यों में नियोजित करते थे।

यह प्रक्रिया ऐसे ही थी जैसी आज विज्ञान की शोधों से सबके सामने आई है। आज की शक्तियों पर तो भारी भरकम खर्चे करने पड़ते हैं; पर ऋषि-योगियों को ऐसा कुछ नहीं करना पड़ता था। आज आकाशवाणी, मोबाइल टावर, इन्टरनेट, ट्रांसमीटर (ध्वनिविक्षेपण यन्त्र) से जोड़ दिया जाता है, एक दूसरे से वार्तालाप किया जा सकता है। दोनों ओर की विद्युत् शक्तियाँ समश्रेणी में होने के कारण आपस में जुड़ जाती हैं और लाभ उठाया जाता है; ठीक उसी प्रकार आत्मिक शक्ति की साधना द्वारा भी शरीर के अन्दर के सुसुप्त केन्द्रों का जागरण किया जाता है और सूक्ष्म शक्ति के प्रवाह से जोड़ा जाता है। रावण अपनी शक्ति को लंका में बैठा अहिरावण से जोड़ता है जो अमेरिका में था। संजय महाभारत की प्रत्येक घटना जो कुरुक्षेत्र घट रही थी, उसे देखकर धृतराष्ट्र को सुना रहा था। इस प्रकार आत्मिक एवं भौतिक शक्ति का लाभ प्राप्त करने की विधा हमारे योगियों, साधकों के पास रहती थी, जिससे परोपकार के कार्य सम्पन्न होते थे। कहीं कहीं इनका उपयोग संकीर्ण या विनाश में भी किया जाता रहा इसे लोगों ने तंत्र का नाम दिया।

मंत्र महामणि विषय व्याल के। मेटत कठिन कुअंक भाल के।।

मंत्र परम लघु जासु बस, विधि हरि हर सुर सर्व।

महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्व।। २५६/बाल

कहँ कुंभज कहँ सिंध अपारा। सोषउ सुजसु संकल संसारा।

रवि मण्डल देखत लघु लागा। उदियँ तासु तिभुवन तम भागा।।

मंत्र की शक्ति जिसे आम भाषा में 'कृत्या' या 'घात' कहते हैं, जो शत्रुओं के विनाश के लिए चलाई जाती थी। अष्टसिद्धि, नवनिधि, अकूत शक्तियों का वर्णन हमारे शास्त्रों में पाया जाता है। हमारे योगी, ऋषि, अग्नि पर चलना, जल पर चलना, वायु मण्डल की सैर करना, कभी शरीर से अदृश्य होना और कभी प्रकट होना, कभी छोटा रूप धारण करना, जैसे लंका में प्रवेश के समय हनुमान जी ने किया ''मसक समान रूप कपिधारी। लंका चलहि सुमिर नरहरी॥'' कभी विशाल रूप धारण किया—

जस जस सुरसा वदन बढ़ावा। तासु दूनि कपि रूप दिखावा॥

सत योजन से आनन कीन्हा। पुन लघु रूप पवन सुत लीन्हा॥

यह सब चमत्कार, रामायण-महाभारत काल में स्थान स्थान पर देखने को मिलते हैं।

योगशक्ति, आध्यात्मिक विज्ञान, शारीरिक जै-विद्युत् द्वारा प्रकृति के सूक्ष्म प्रवाह के माध्यम, सब कुछ करने में समर्थ हैं।

आज के युग की शक्तियाँ जिनका अन्वेषण वैज्ञानिकों ने किया जैसे रैडार, गैस बम, अश्रुगोले, कीटाणु बम, परमाणु बम, मृत्युकिरणें आदि विनाशकारी जखीरा जो पल भर में समस्त भूमण्डल को धूल में मिला सकता है जिसके निर्माण में अकूत धन लगाया गया है, यह शक्ति आज विध्वंस की ओर अग्रसर है।

प्राचीन काल में भी हमारे पास मोहन, मारण, उच्चाटन, ब्रह्मास्त्र, नागपाश, वरुणास्त्र आग्नेयास्त्र थे, जो शत्रु सेना पर प्रहार कर वापस तरकस में आ जाते थे। शब्दभेदी बाण ये सब मंत्र शक्ति से संचालित होते थे।

महाभारत में युद्ध होने से पूर्व अर्जुन ने इन्द्र से आवश्यक अस्त्र प्राप्त किये तथापि युद्ध से पूर्व भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को देवी (जगदम्बा) की आराधना हेतु प्रेरित किया और कहा कि देवी द्वारा

कवच की प्राप्ति करो ताकि सुरक्षा हो सके। दुर्गा ने दर्शन दिये, रक्षा कवच दिया।

शक्ति की उपासना प्राय: सभी ने की है। हमारे देश में तीन सम्प्रदाय वैष्णव, शैव एवं शाक्त के रूप में जाने जाते हैं। कुछ लोग भगवान् के शालिग्राम रूप या विष्णु की पूजा करते हैं, वे वैष्णव कहलाते हैं; दूसरे वे हैं, जो भगवान् शिव की पूजा करते हैं, शैव कहलाते हैं। यदि शिव से ई को निकाल दें अर्थात् शक्ति को निकाल दें, तो शव हो जाता है। ऐसे ही जब व्यक्ति से जीव की शक्ति निकल जाती है तो मृतक की संज्ञा दी जाती है। तीसरे होते हैं— शक्ति के पुजारी, अक्सर सारे संत, भक्त, ऋषि महामनाओं ने शक्ति को पूजा। गायत्री, सावित्री, सरस्वती, लक्ष्मी, काली चामुण्डा, वाराही, ऐन्द्री, वैष्णवी, माहेश्वरी, कौमारी, ईश्वरी, ब्राह्मी में से किसी भी रूप में शक्ति की पूजा जा सकती है।

शक्ति की साधना राम, कृष्ण आदि ने की, जो ह्रीं के उपासक थे और महारथी जिन्होंने देवी की उपासना क्लीं के रूप में शक्ति वृद्धि के लिए की जैसे रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद, जरासंध, महिषासुर, हिरण्यकश्यपु आदि।

शक्ति सब को चाहिए; यहाँ हम एक छोटा सा उदाहरण देकर शक्ति के माहात्म्य को बताने का प्रयास करेंगे।

मानव के अन्दर परमात्मा की दी हुई एक शक्ति मौजूद है, उसका उपयोग जहाँ भी वह करता है, वहीं प्रगति होती दिखाई पड़ती है। एक साईकल जो नई-नई खरीदी गई, घर में रखे रखे खराब हो जायेगी यदि उसका उपयोग मानव द्वारा न किया गया। जड़ यंत्र साईकल पर जब तक चेतन यंत्र रूपी मनुष्य नहीं बैठता, तब तक बेकार है ज्यों ही व्यक्ति उस पर सवार हुआ साईकल शक्ति के अनुसार दौड़ती है और मनुष्य की सहायक बन उसकी यात्रा को सुगम करती है और मंजिल आसान हो जाती है। निर्जीव में गति आ जाना, चेतन शक्ति का प्रत्यक्ष चमत्कार है।

मोटर साईकल जो शक्तिरूपी बेटरी से युक्त है, पेट्रोल भी भरा है पर अपने स्थान पर ही खड़ी रहेगी। जब तक कोई व्यक्ति अपनी शक्ति से उसका उपयोग न करेगा, व्यक्ति से जुड़ते ही तीव्र गति से चलने लगती है। यही, कार, मोटर, ट्रक, ट्रेन, या अनेक शक्ति उत्पादक यन्त्र जेनेरेटर आदि का हाल है।

विद्युत् उत्पत्ति के केन्द्र बड़े-बड़े बाँधों पर लगाये जाने वाले टर्वाइन की तीव्र चाल पर ही निर्भर करते हैं। तेज पानी की धार से इन्हें घुमाया जाता है। ये केन्द्र ऊर्जा पैदा करते हैं यह शक्ति का ही चमत्कार है। जो जन सामान्य के काम आते हैं।

अगर किसी की बोरियों से भरी बैलगाड़ी रास्ते में कहीं दलदल में धँस जाती है तो जो बैल अपनी शक्ति से उसका भार ढो रहे थे, वे घुटने टेक देंगे कि अब हम एक कदम भी आगे न बढ़ सकेंगे, अतिरिक्त शक्ति की आवश्यकता है तो दस बीस जवानों की शक्ति का नियोजन करना ही पड़ेगा तभी फँसी गाड़ी निकल पायेगी, यह शक्ति का ही चमत्कार है।

इसी प्रकार छोटी शक्ति को जो किसी खराबी के कारण चलने में असमर्थ है उसे उससे बड़ी शक्ति द्वारा ही ढकेला जा सकता है। जैसे छोटे ट्रक को बड़े ट्रक से, मालगाड़ी के भरे डिब्बे को गुड्डे की तरह उठाकर शक्तिशाली क्रेन पटरी पर रख देती है।

भौतिक जगत् की, व्यक्तिगत पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान, आध्यात्मिक एवं भौतिक शक्तियों से ही सम्पन्न हो सकते हैं। जैसे वैज्ञानिक विविध यन्त्रों से प्रगति के नित नये द्वार खोलते जा रहे हैं ठीक उसी प्रकार ऋषि, मनीषी, योगी, संत महापुरुष, भक्तगण, आध्यात्मिक शक्ति के संचय से दैहिक, दैविक, भौतिक तापों का शमन कर सकते हैं। हमारे समस्त धर्म ग्रन्थ इतिहास इसके साक्षी हैं। शक्ति साधना से प्राप्त होती है और साधना करने से सिद्धियाँ स्वतः ही दौड़ कर भक्त का कल्याण करती हैं अतः

माँ दुर्गा की साधना कर लाभान्वित होवें, खासकर दोनों नवरात्रों में दुर्गा सप्तशती का पाठ अवश्य करें।

'दुर्गा सप्तशती पारायण' नामक पुस्तक सरल छंद, चौपाई एवं दोहों में अनुवादित की गई है। इसकी सूक्ष्म प्रेरणा पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, व माता जी द्वारा मिली। इसे उन्हीं के चरणों में सादर समर्पित कर रहा हूँ।

इसमें पूजा विधान का क्रम सरल ही रखा गया है। अधिक पेचीदियाँ मन को भ्रमित कर देती हैं अत: इसका ध्यान रखा है कि सामान्य पूजन कर इसका पाठ किया जावे। यों तो कठिन संस्कृत एवं कठिन पूजा विधि को सामान्य जन जो पाठ तो करना चाहता है पर अशुद्धि के भय से कि कहीं ऐसा न किया गया तो देवी रुष्ट हो श्राप दे देंगी आदि भ्रमों में न पड़ें और श्रद्धा भक्ति से साथ अपनी पूजा स्थली पर दुर्गा माँ का चित्र एवं गायत्री माँ का चित्र स्थापित करें। एक ओर कलश दूसरी ओर अग्नि कोण में दीपक (घृत) का रखें, बीच में श्रीगणेशजी का चित्र या स्वस्तिक बना लें, इतने से पूजा क्रम प्रारम्भ करें।

प्रथम पवित्रीकरण, आचमन, शिखाबंधन, न्यास, प्राणायाम, पृथ्वी पूजन, श्री गणेश, गायत्री, माँ दुर्गा का आवाहन करें, कलश, दीप पूजन, तिलक, पूजन सामग्री भाव सहित पूजा स्थली पर अर्पण करें। देव शक्तियों का आवाहन एवं नमस्कार करें—

### पवित्रीकरणम्

**ॐ अपवित्र: पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।**

**य: स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तर: शुचि:॥**

**ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्ष:, पुनातु पुण्डीकाक्ष:, पुनातु।**

### आचमनम्

**ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा॥ १॥**

ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा॥ २॥

ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

## शिखावन्दनम्

ॐ चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेजसमन्विते।

तिष्ठ देवि शिखा मध्ये, तेजोवृद्धिं कुरूष्व मे॥

## प्राणायाम

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रयोदयात्। ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॐ ॥

## न्यास

ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु। (मुख को) ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु। (नासिका छिद्रों को) ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। (नेत्रों को)

ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। (कानों को) ॐ वाह्वोर्मे बलमस्तु। (बाहुओं को) ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु। (जंघाओं को) ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि, तनूस्तन्वा मे सहसन्तु। (सारे शरीर पर)।

## पृथ्वी पूजनम्

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोकाः देवि! त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

## गणपति पूजनम्

ॐ एकदंताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो बुद्धि प्रचोदयात्।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

श्री गणपतये नमः, आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

## देवीपूजन आवाहन

सर्वमंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि, नमोऽस्तुते॥
अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके, न मा नयति कश्चन।
ससत्यश्वकः सुभद्रिकां, काम्पीलवासिनीम्॥

## कलश पूजनम्

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा नऽआयुः प्रमोषीः॥
ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ꣳ
समिमं दधातु। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।
ॐ वरुणाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि पूजयामि। गंधाक्षतपुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। ततो नमस्कारं करोमि।

## दीपपूजनम्

ॐ अग्नि ज्योंतिर्ज्योंतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योंतिर्ज्योंतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चोज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

तिलक करें– ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवा, स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्योर्ं अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

## सर्वदेवनमस्कारः

१. ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। २. ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ३. ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ४. ॐ

वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ५. ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ६. ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। ७. ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ८. ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ९. ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। १०. ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ११ ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। १२. ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। १३. ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। १४. ॐ सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यो नमः। १५. ॐ एतत्कर्मप्रधान श्रीदुर्गायै नमः। १६. ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

**गंधाक्षतपुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। ततो नमस्कारं करोमि।**

तत्पश्चात् (१) **देवी के कवच** का पाठ करते समय भाव बनाये कि हमारे शरीर में भी स्थान स्थान पर दैवी शक्ति का वास हो रहा है और उन्हीं की समस्त शक्तियों का कवच हमने धारण कर लिया है। एक निर्भीकता की शक्ति हमारे अन्दर छा रही है और हम सुरक्षित हैं।

(२) **अर्गला** सांकल को कहा जाता है। यहाँ ग्यारह शक्तियों में विराजमान देवी चण्डिका को नमस्कार करें और अपने भीतर धारण करे सांकल से बाहर के पटों को बन्द कर लें ताकि अज्ञान न आ सके, अर्गला पूर्ण करें।

(३) **कीलक**— हमारे शरीर एवं जिस आसन पर बैठकर हमें पाठ करना है वे दोनों पवित्र हों। बाहरी विघ्न न आ सके इस हेतु कीलक का पाठ करें।

(४) अब भक्त को पूरी श्रद्धा निष्ठा से सर्वप्रथम गायत्री महामंत्र की एक माला अवश्य करनी चाहिए। पश्चात् एक से तेरह अध्याय पूर्ण करने चाहिए। जिन्हें समय कम हो वे प्रति दिन एक अध्याय का अवश्य पाठ करें। इससे दैनिक जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि एवं माँ की शक्ति निरन्तर प्राप्त होती रहेगी। जिससे आने वाले रोग, शोक, विघ्न, बाधाएँ शान्त होगी इसमें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है। पाठ पूर्ण होने के बाद देवशक्ति को विदाई देवें सूर्य को अर्घ्य गायत्री मंत्र से देवें और परिक्रमा के बाद त्रुटियों के लिए क्षमा याचना भावभरी मुद्रा में करें।

विद्वज्जन तो संस्कृत के मंत्रों का पाठ शुद्ध कर सकते हैं, उन्हें मूल मंत्रों का पाठ भी करना चाहिए ऐसी विनम्र प्रार्थना है।

पद्य रचना में मात्राओं की त्रुटि रहना मेरे जैसे नादान के लिए स्वाभाविक है सो सुधी पाठक भावनाओं को समझकर गलती को क्षमा करेंगे और मार्गदर्शन प्रदान करेंगे ऐसी आशा है। महामण्डलेश्वर स्वामी रामानन्द जी सरस्वती, मौजी बाबा की गुफा (कोटा) (राज०) एवं राव सवाई चन्द्रवीरसिंह, बिजोलियाँ (राज०) के आशीर्वाद प्राप्त हुए एवं आदरणीय श्री गौरी दत्त जी त्रिपाठी, बरेली का सहयोग मिला, इनका हृदय से आभारी हूँ।

शारदीय नवरात्र १९-०९-२००९ विनीत

**वैद्य फूलचन्द्र शर्मा**
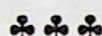
| | |
|---|---|
| ॐ | व्याप्त सब जगत् में, प्रणव कहें सब लोग।<br>इसकी ध्वनि ही गूँजती, अ,उ,म, का योग। |
| ऐं | नारी के रूप में, सकल सृष्टि दरसाय। |
| ह्रीं | नाम महिमा कही, जग पालन ज्यो ध्याय। |
| क्लीं | कामरूपिणी शक्ति है, बीज रूप में जान। |
| चामुण्डा | नाम तव हुआ, चण्ड-मुण्ड अवसान। |
| यै | कार वर दायिनी, करते हैं सब ध्यान। |
| विच्चे | स्वरूप पहिचानिए, हो नित्य अभयदान। |

| १. प्रथमं शैलपुत्री च | | |
|---|---|---|
| ९<br>नवमं सिद्धिदात्री च<br>नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः | २<br>द्वितीयं<br>ब्रह्मचारिणी | ८<br>चाऽष्टमम्<br>महागौरीति |
| ६<br>षष्ठं कात्यायनीति च | ३<br>तृतीयं<br>चन्द्रघण्टेति | ७<br>सप्तमं<br>कालरात्रीति |
| ४ कूष्माण्डेति चतुर्थकम् | | ५<br>पंचमं<br>स्कंदमातेति |

**प्रथमं शैलपुत्री च, द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।**
**तृतीयं चन्द्रघण्टेति, कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥ ३॥**
**पञ्चमं स्कन्दमातेति, षष्ठं कात्यायनीति च।**
**सप्तमं कालरात्रीति, महागौरीति चाष्टमम्॥ ४॥**
**नवमं सिद्धिदात्री च, नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।**
**उक्तान्येतानि नामानि, ब्रह्मणैव महात्मना॥ ५॥**

## सप्तश्लोकी दुर्गा

शिव बोले देवी सन जाही। भक्तन को तुम सुलभ सदा ही।
कर्म विधान बतावऊँ सोई। अपने मुख से सुनावहु मोई॥
देवी कहत शिव प्रेम अपारा। कलियुग साधन बहुत प्रकारा।
कामना जासु सिद्ध ह्वै जाई। अम्बा स्तुति करहिं जग माई॥

स्तोत्र मंत्र, नारायण ऋषि, अरु छन्द अनुष्टुप जान।
महाकाली, महालक्ष्मी महासरस्वती देवता मान॥

सौ श्लोक जो नित पढ़े, दुर्गा प्रसन्नहि जान।

श्रद्धा से विनियोग करे, सुख पाये इंसान॥

महामाया की महिमा न्यारी। ज्ञानिन विवश मोह में डारी॥ १॥

दुर्गा याद करत सब प्राणी। दुःख दारिद्र दूर भय जानी॥

स्वस्थ व्यक्ति करें चिन्तन तेरा। बुद्धि पाय कल्याण न देरा॥

न कोई दूजा तुम बिनु माता। द्रवित होंय उपकारी दाता॥ २॥

नारायणी तुम मंगल दाता। मंगलमयी रूप सब भाता॥

शिवा तुम्हीं कल्याण प्रदायिनी। भक्तों के दुःख दूर निवारिणी॥

सिद्धिदायिनी मातु भवानी। पुरुषार्थी की तुम हो सानी।।

तीन नेत्र धारण करो माता। मा नारायणि शीश झुकाता॥ ३॥

नमन करे नारायणि देवी। आये शरण दीन जन जे भी॥

सबकी पीड़ा हरती माता। संरक्षण पीड़ित जन पाता॥ ४॥ ।

सर्वेश्वरि धरि विविध स्वरूपा। शक्ति अपरमित मिले अनूपा॥

दिव्यरूप दुर्गा का भारी। भय हरती, नमते नर नारी॥५॥

जब प्रसन्न भक्तन पर होई। रोग नशावहिं क्षण में सोई॥

प्रकुपित होउ जबहिं तुम माता। इच्छित काम नष्ट हो जाता।।

जो आवहिं तुमरी शरणाई। विपत्ति सकल दूरि भगि जाई॥

आये शरण शक्ति ले साथा। शरण देत, जो होंय अनाथा॥ ६॥

सर्वेश्वरि! त्रयलोक निवासिनि। बाधा हरो, शत्रु कर नाशनि॥७॥

# देवी कवच

चण्डिका देवी को नमन, कवच लिखूँ करि ध्यान।
ब्रह्मा ऋषि, छन्द अनुष्टुप, चामुण्डा देवता मान।।
अंग-न्यास उत्तम बीज है, दिग्बन्ध देवतत्व जान।
जगदम्बा की प्रसन्नता, विनियोगादि करो सुजान।।
ऊँ नमश्चण्डिकायै।।

**मार्कण्डेय कहते हैं**

मार्कण्डेय विनय सुनि ताता। पितामह से पूछत गुप्त वाता।
रक्षा सबकी करहु गुसांई। अप्रकट बात मोहि देऊ सुनाई।।१।।

**ब्रह्मा बोले**

देवी कवच इक साधन जानो। शुचि गोपनीय उपकारी मानो।।
महामुने नवमूर्ति बखानी। नव दुर्गा सकल जग जानी।।२।।
शैलपुत्री नाम प्रथम कहायी। ब्रह्मचारिणी द्वितीय बतायी।।
तृतीय रूप चन्द्रघण्टा जाना। कूष्माण्डा चतुर्थ नाम सुजाना।।३।।
स्कन्दमाता तव पंचम नामा। कात्यायनी ऋषि पाये विश्रामा।।
सप्तम कालरात्रि जग जानी। काल चाल रक्षक कही भवानी।।
अष्टम महागौरी का स्वरूपा। नवम सिद्धिदात्री अनुरूपा।।४।।

**सभी नाम विख्यात जग, करते जन कल्यान।**

**प्रतिपादित सब शास्त्र में, ब्रह्म महात्मन जान॥ ५॥**

अग्नि जले रणभूमि घिराहीं। घोर कष्ट में जो फँसि जाही॥

भय आतुर आवहि शरणाई। कभी अमंगल होय न भाई॥ ६॥

रण संकट आवहिं जब कोई। भय दुःख शोक न पावहिं सोई॥ ७॥

जो देवि सुमिरहिं मन माहीं। निश्चय अभ्युदय होय जाही॥

चिन्तन जो जन करहिं तुम्हारा। रक्षक बनि करती उद्धारा॥ ८॥

प्रेत सवारी चामुण्डा करहिं। वाराही भैंसा पर चढ़हिं॥

ऐन्द्री का है ऐरावत हाथी। वैष्णवी आसन गरुड़ बनाती॥ ९॥

बैल असवारी माहेश्वरी जाना। कौमारी मोर वाहन माना॥

विष्णुप्रिया माँ लक्ष्मी माना। कमलासन हस्त कमल आना॥ १०॥

ईश्वरी वाहन वृषभ बनाया। श्वेतरूप सुन्दर झलकाया॥

हंस विराजत ब्राह्मी देवी। आभूषण सब साजहिं सेवी॥ ११॥

**योग शक्ति से युक्त तुम, पूर्ण तुम्हीं हो मात।**

**आभूषण से अलंकृत, नाना रत्न सुहात॥ १२॥**

देविहि क्रोधहिं रूप अपारा। भक्तन हित रथ बैठिहिं वारा॥

शंखचक्र गदा हाथ विराजे। हल मूसल और शक्ति साजे॥ १३॥

खेटक तोमर परशु विशाला। धारण अस्त्र करहिं जसकाला॥

पाशु बांधिवे को है जाला। कुन्त त्रिशूल शार्ङ्गधनु आला॥ १४॥

दैत्य नाश हित रूप बनावहिं। भक्त अभय करि सुख पहुँचावहिं॥

करे कल्याण देवजन माता। अस्त्र शस्त्र यहि कारण भाता॥ १५॥

## प्रार्थना

महारौद्र तुम मातु भवानी। घोर पराक्रम की तुम सानी॥

अति उत्साह देवि! बलवाना। भय नाशिनि हम नमहि अजाना॥ १६॥

रक्षा करो जगदम्बे माता। कठिन दृष्टि भय शत्रु बढ़ाता॥
ऐन्द्री क्षमा पूरव से करही। अग्नि शक्ति अग्निकोण से वरही॥ १७॥
दक्षिण दिक् वाराही की पूजा। खड्गधारी नैऋत्य ना दूजा॥
पश्चिम दिश वारुणी करे रक्षा। वायुकोण मृगवाहिनी सुरक्षा॥ १८॥

**उत्तर दिशा कौमारी मां, शूलधारिणी ईशान।**
**ब्रह्माणी रक्षा ऊपर करे, नीचे वैष्णवी जान॥ १९॥**
**आगे जया रक्षा करे, विजया पीछे मान।**
**दसो दिशा रक्षा करे, शववाहनी पहिचान॥ २०॥**

अजिता वायें करहि सुरक्षा। अपराजिता दक्षिण की रक्षा॥
शिखा मध्य उद्योतिनी राजे। उमा शीश रक्षा हित साजे॥ २१॥
मालाधरी ललाट रखवारी। यशस्विनी भौंह रक्षण कारी॥
भौंह के मध्य त्रिनेत्रा देवी। नथुन रक्षक यमघण्ट देवी॥ २२॥
दोऊ कान बीच रहे शङ्खिनी। रक्षा कानों की करे द्वारवासिनी॥
कपोल रक्षिका कालिका देवी। कर्णमूल रक्षक शांकरी देवी॥ २३॥
घ्राणेन्द्रिय में सुगंधा विराजे। ऊपरी ओठ चर्चिका साजे॥
अमृतकला निम्न ओठ में पाई। सरस्वती रक्षक जीभ बताई॥ २४॥
दाँतन की रक्षक है कौमारी। कण्ठ प्रदेश चण्डिका भारी॥
चित्रघण्टा गल घाँटी रखावहि। तालु रक्षा महामाया कराही॥ २५॥
ठोड़ी की रक्षा करे कामाक्षी। सर्वमङ्गला वाणी की साक्षी॥
भद्रकाली गरदनहि रखावै। मेरुदण्ड धनुर्धरी बचावे॥ २६॥

**नीलग्रीवा कण्ठ वाह्य में, नल कूबरी नली में जान॥**
**दोऊ कंधों में खड्गिनी, बज्रधारिणी भुजा में मान॥ २७॥**

दोऊ हाथन दण्डिनी सुहाई। अंगुली की रक्षक अम्बिका माई॥
शूलेश्वरी नख रक्षक मानो। कांख की रक्षक कुलेश्वरि जानो॥ २८॥
दोई स्तन महादेवी अनूपा। शोक विनाशिनी मन स्वरूपा॥

ललिता देवी हृदय कर वासा। शूलधारिणी उदर प्रकाशा॥ २९॥
नाभि कामिनी करहिं निवासा। गुह्य भाग गुह्येश्वरी वासा॥
लिङ्ग पूतना, कामिका मानो। महिषवाहिनी गुदारक्षक जानो॥ ३०॥
भगवती रक्षक कटि प्रदेश की। विन्ध्यवासिनी रक्षक जांघ की॥
महाबला कामना कर मोरी। पिण्डलिन रक्षक कृपा है तोरी॥ ३१॥
तेजसी रक्षा करे ऐड़िन की। नारसिंगी कवच बनी घुटनन की॥
श्रीदेवी पद अंगुली रखावहिं। तलवासिनि पदतालु समावहिं॥ ३२॥
नाखूनों की रक्षा करें दंष्ट्रकराली। ऊर्ध्वकेशिनी केश के रखवाली॥
रोमकूप कौबेरी निवासा। त्वचा रखाये वागेश्वरि आसा॥ ३३॥

**रक्त मांस मज्जा, वसा, अस्थि मेद पार्वती राख।**
**कालरात्रि मुकुटेश्वरी, आंत पित्त रक्षक भाख॥ ३४॥**

कमलकोश मूलाधार पद्मावती। चूडामणि कफ को संघारती॥
ज्वालामुखी नख तेज रक्षिका। अभेद्या संधि की रक्षिका॥ ३५॥
वीर्य की रक्षा करे ब्रह्माणी। क्षेत्रेश्वरी छाया महारानी॥
अहंकार मन बुद्धि बतलाई। धर्म धारिणी रक्षक माई॥ ३६॥
वज्रहस्ता वज्र धारण करहीं। प्राण, अपान, व्यान उदानहीं॥
कल्याण शोभित भगवती माता। कल्याण शोभना प्राण विधाता॥ ३७
शब्द स्पर्श रूप गंध रस दाता। योगिनी रक्षा करहु सुमाता॥
सत रज तम की तुम हो सानी। रक्षा सबकी करो नारायणी॥ ३८॥
आयुष रक्षा करहिं वाराही। धर्म रक्षक तुम वैष्णवी माई॥
चक्रिणी देवि यश कीर्ति राखहिं। लक्ष्मी से धन विद्या पावहिं॥ ३९॥
गोत्र की रक्षा करहिं इन्द्राणी। पशुओं की रक्षक चण्डिके रानी॥
महालक्ष्मी पुत्र रक्षक जानो। भैरवी पत्नी रक्षिका मानो॥ ४०॥
सुपथा पथ को सुगम बनाओं। क्षेत्रकरी शुभ मार्ग पहुचाओ॥
राजदरबार महालक्ष्मी विराजे। चतुर्दिशा विजया, भय भाजे॥ ४१॥

देवि कवच स्थान न आता। होय सुरक्षित तुम से माता॥
तुम हो विजय शालिनी माता। पापनाशिनी जग विख्याता॥४२॥

**भला जो चाहे शरीर का, कवच पाठ कर जाय।**
**बिना कवच के पाठ नर, कदम एक नहि जाय॥४३॥**
**होय सुरक्षित कवच से, जहाँ कहीं भी जात।**
**कामना सिद्धि होय जय, धनालाभ मिल जात॥**
**अभीष्ट वस्तु चिन्तन करे, निश्चय प्राप्ति होय।**
**इस भू पर तुलना रहित, ऐश्वर्य भोगी होय॥४४॥**

मनुज सुरक्षित कवच से होई। निर्भय रहे सत्य यह सोई॥
हार युद्ध में कबहु न होई। तीन लोक पूजहिं सब कोई॥४५॥
दुर्लभ देव कवच यह माता। रक्षा करती सबकी त्राता॥
तीन काल संध्या में पढ़हीं। जो श्रद्धा से धारण करहीं॥४६॥
दैवी कला पावहिं जन जोई। तीन लोक हारहिं न सोई॥
अकाल मृत्यु से मुक्ति होई। वर्ष शतायु पावहिं जग सोई॥४७॥
चेचक कोढ़ मकड़ी अरु फोड़ा। चर्म रोग नहीं उपजहि औरा॥
स्थावर जंगम विष अति नाना। दूर कवच से होहिं सुजाना॥४८॥
मारण, मोहन उच्चाटन करहीं। मंत्र, यन्त्र पृथ्वी पर करहीं॥
भूचर खेचर जलचर जोई। कवच पाठ से भय न होई॥४९॥
जन्मदेव कुलदेव कण्डमाला। डाकिनी शाकिनी घोर कराला॥
अन्तरिक्ष में जो विचरण करहीं। बलशाली डाकन्या कहहीं॥५०॥
भूत ग्रह और पिशाचहि मानहिं। यक्ष राक्षस गंधर्वहिं जानहि॥
ब्रह्मराक्षस बेताल निवासा। कूष्माण्ड भैरव का हो वासा॥५१॥

**कवच हृदय धारण करे, दूर सभी भग जात।**
**राजा करते मान है, तेज कवच से पात॥५२॥**

यश वाढ़े कीर्ति बढ़ि जाई। करे जो पाठ कवच मन लाई॥

शप्तशती चण्डी पढ़े जोई। भूमण्डल सुख पावे वोई॥५३॥

जब तक भू वन पर्वत रहहीं। थिर पृथ्वी कानन संग रहहीं॥

संतान परम्परा तब तक जानी। पुत्र पौत्रादि की कहे कहानी॥५४॥

महामाया प्रसाद जो धारहि। अंतिम क्षण में सुख को पावहिं॥

पाये परम पद नित्य कहाता। जो देवों को दुर्लभ माता॥५५॥

**दिव्य रूप धारण करे, कल्याणक शिव जान।**

**देवी कवच अब पूर्ण है, मन आनन्दित मान॥५६॥**

♣♣♣

सेवा तप संयम करो, सहनशील हो तात।

गृहस्थ धर्म धारण करो, सुख सम्पत्ति पा जात॥

अपने और पराए का, भेदभाव कर त्याग।

यह ही सुख का मूल है, मत इससे तू भाग॥

जन जन की सेवा करो, इससे हो कल्यान।

ईश्वर की पूजा समझ, देंगे वे वरदान॥

तुमको नहीं पसंद जो, दूजे को क्यों होय।

सोचो समझो फिर करो, जो सबके हित होय॥

## अर्गला स्तोत्र

श्रीअर्गला स्तोत्र के, विष्णु ऋषि तू जान।
छंद अनुष्टुप जानिये, महालक्ष्मी देवता मान॥
चण्डिका देवी को नमन, जप विनियोग हो पूर्ण।
सप्तशती का पाठ कर, अङ्ग सहित परिपूर्ण॥

**मार्कण्डेय कहते हैं**

जय हो जयन्ती मंगलाकाली। कपालिनी तुम ही भद्रकाली॥
दुर्गा क्षमा शिवा और धात्री। स्वाहा स्वधा नमन करूँ मातृ॥१॥।
पीड़ा सकल प्राणि जन हरहीं। नमन चामुण्डा को हम कर ही॥
कालरात्रि को नावहिं शीशा। सकल जगत में व्यापक ईशा॥२॥
मधुकैटभ को मारन हारी। ब्रह्मा को वर दे दिये भारी॥
रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥३॥
महिषासुर का वध करो देवी। सुख भक्तन को दो, जो सेवी॥
रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥४॥
रक्तबीज संहारन हारी। चण्डमुण्ड नाशहि महतारी॥
रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥५॥
शुम्भ-निशुम्भ विदारन हारी। धूम्रविलोचन मर्दन हारी॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥६॥

युगल-चरण पूजहिं जो कोई। देवी सौभाग्य पाये सो वोही॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥७॥

रूप चरित्र अचिन्त्य तुम्हारा। सकल शत्रु का नाशन हारा॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥८॥

पाप चण्डिका दूरि करि, चरण झुकाऊँ माथ।

रूप, जय, यश दीजे मुझे, काम दोष मिटि जात॥९॥

रोग नष्ट करे चण्डिका रानी। स्तुति करहुँ भक्तिहिय आनी॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥१०॥

भक्ति सहित करहिं तव पूजा। सतत ध्याये तुमसे न दूजा॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥११॥

सौभाग्य, आरोग्य की दाता। तव चरणन में सुख पा जाता॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥१२॥

मुझसे द्वेष करहिं जो कोई। नाश करो बल पाऊँ तोई॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥१३॥

मम कल्याण करहुँ तुम माता, उत्तम सम्पत्ति की हो दाता॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥१४॥

देव असुर नावहिं पद माथा। मणि के मुकुट घिसत दिन राता॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥१५॥

बना भक्त विद्वान् यशस्वी। लक्ष्मीवान होवे तेजस्वी॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥१६॥

**दैंत्य प्रचण्ड दर्प हर, शरण में आया मात।**

**रूप और जय, यश दो, काम दोष मिटि जात॥१७॥**

ब्रह्मा करहिं प्रशंसा तोही। चार भुजा परमेश्वरि सोही॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥१८॥

विष्णु स्तुति करहिं तुम्हारी। नित्य निरन्तर भक्ति भारी॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥ १९॥

गिरिजा पति महादेव प्रशंसहिं। परमेश्वरी रमती सब अंशहि॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥ २०॥

शचि पति इन्द्र करैं तब पूजा। परमेश्वरि प्रति भाव न दूजा॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥ २१॥

दैत्य घमण्ड दूर कर माता। भुजा प्रचण्ड क्षीण कर दाता॥

रूप और जय यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥ २२॥

अम्बे देवि, भक्त जन तेरे। परम आनन्द पायें बहुतेरे॥

रूप और जय, यश की दाता। कामादिक रिपु मेटहुँ माता॥ २३॥

**मन इच्छा अनुरूप मां, पत्नि मनोरमा देऊ।**

**संसार सागरतारिनी, उत्तम कुल हो नेहु॥ २४॥**

**स्तोत्र पाठ जो भी करे, जप संख्या फल पात।**

**प्रचुरसम्पत्ति पाये वो, अर्गला स्तोत्र मन भात॥ २५॥**

टी.बी, केंसर जन्म दें, मादक द्रव्य जहान।

इनको काम न लीजिए, जीवित मृतक समान॥

सुख दुःख आते जात हैं, ज्यों आते दिन-रात।

हिम्मत से ले काम तो, क्षणभर न ठहरात॥

# कीलक

शिव ऋषि कीलक मंत्र के, छन्द अनुष्टुप जान।
महासरस्वती है देवता, जप विनियोग को मान॥

**मार्कण्डेय कहते हैं॥**

ज्ञान विशुद्ध शरीरहि जाना। तीन वेद त्रय नेत्र सुजाना॥
मुकुट अर्धचन्द्र मस्तक धारहिं। शिवहि नमन कल्याणी जानहिं॥१॥
जो अभिकीलक मंत्रहिं जाना। विघ्न निवारक सिद्धि सुजाना॥
सप्तशती को विधिवत जानहिं। अन्य मंत्र शुभदायक मानहिं॥२॥
कर्मसिद्धि उच्चाटन आदिहु। दुर्लभ वस्तु सकल जग पावहुँ॥
सप्तशती जो स्तुति करहीं। सच चित आनंद देवी करहीं॥३॥
औषधि मंत्र न साधन दूजा। निज कारज हितकरहिं जो पूजा॥
किये कर्म जो सब सधि जाई। बिना जपे उच्चाटन पाहीं॥४॥
अन्य मंत्र जग में जो होई। सप्तशती बिन फल सम होई॥
किन्तु श्रेष्ठ सब स्तोत्र कल्याणी। शिव शंका दूर करते प्राणी॥५॥

**गुप्त किया महादेव ने, सप्तशती स्तोत्र जान।**
**अखण्ड पुण्य हो पाठ से, अन्य मंत्र पुण्य न मान॥**
**शिव जी ने इस हेतु ही, निर्णय लिया सुजान।**

**स्तोत्र पाठ जो भी करे, यथार्थ हृदय में जान॥ ६॥**

अन्य मन्त्र जप करे मन लाई। सप्तशती स्तोत्र पढ़े जो भाई॥
मिले लाभ कल्याण का भागी। मन में संशय कबहु न जागी॥
आठे चौदश कृष्ण पक्ष को। एकचित्त हो अर्पित देवी को॥७॥
प्रसाद रूप में पावहिं जोही। देवी प्रसन्न अन्यथा न हो ही॥
महादेव कीलित किया स्तोत्रहिं। सिद्धि के प्रतिबन्ध स्वरूपहिं॥८॥
उक्त विधि से निष्कीलन करहीं। शुद्ध उच्चारण पाठ जो करहीं॥
वह नर सिद्धि पाय सुजाना। देवी पार्षद, गंधर्वहिं जाना॥९॥
विचरण करहिं जगत सब सारा। भय पाये न कहीं संसारा॥
अपमृत्यु वश रहहि न वोही। देहत्याग क्षण मुक्ति हो ही॥१०॥
कीलन विधि जानहिं जो कोई। करि परिहार पाठ करे जोई॥
जो जानहि नहीं विधि विधाना। नाश होय पाये दुःख नाना॥११॥
कीलक निष्कीलन विधा जो पाई। स्तोत्र पाठ निर्दोष ह्वै जाई॥
ज्ञानी जन सब करे अस पाठा। पावहिं सुख मन होये गाठा॥१२॥
सौभाग्य नारी में पड़े दिखाई। देवी प्रसाद का फल है पाई॥
भगवती स्तोत्र करहिं नित जोई। कल्याणक ये सबको होई॥१३॥
मंद स्वर पाठ स्वल्प फल पावहिं। ऊँचे स्वर में पाठ जो गावहिं॥
पूर्ण सिद्धि फल मिले तत्काला। शुभारम्भ उच्चारण वाला॥१४॥
तव प्रसाद ऐश्वर्य जग माता। सौभाग्य स्वास्थ्य सम्पत्ति पाता॥
मोक्ष सिद्धि शत्रुन करे नाशा। स्तुति क्यों न करे बिन आशा॥१५॥

श्री दुर्गायै नमः

# प्रथम अध्याय

## विनियोग

प्रथम चरित्र ब्रह्मा ऋषि, महाकाली देवता जान।
गायत्री छंद नंदा शक्ति है, रक्त दन्तिका बीजहि मान।।
अग्नि तत्त्व ऋग्वेद रूप है, इसको ले पहिचान।
महाकाली प्रीति करो प्रथम, चरित्रजप विनियोग मान।।

## ध्यान

कैसे मरें मधु कैटभ, इस हेतु ब्रह्मा विचारही।
सेवन करूँ महाकालिका, आशीष मैं तव चाहही।।
तलवार चक्र गदा धरे, धनु बाण परिघ धारिणी।
कर में भुशुण्डि त्रिशूल है, मस्तक और शंख सुहावनी।।
दस भुजा आयुध शोभते, दस पैर, दस मुख मातु के।
है नयन तीन, सुअंग भूषण, नीलमणि संग धारि के।।

ॐ श्री चण्डिका देव्यै नमः

**ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच॥ १॥**

**सूर्य पुत्र सावर्णि अष्टम मनु जानी।**

**कथा जन्म विस्तृत हिय मानी॥ २॥**

सावर्णि भये मन्वतर स्वामी। वही प्रसंग, माँ कृपा से नामी॥ ३॥

स्वारोचिष मन्वन्तर के माही। सुरथ नाम राजा भये शाही॥

चैत्रवंश जन्मे पूर्व काला। सकल भूमण्डल भयहु निहाला।४॥

औरस सुत सम प्रजा को पालहिं। धर्म नीति को मन से धारहिं॥

कोला विध्वंसी भयहु विपरीता। क्षत्रिय शत्रु भय करहिं अनीता॥५॥

दण्डनीति अति प्रबल दृढ़ाई। शत्रुन संख्या ना अधिकाई॥

तदपि पराजित भये जब राजा। कोलाध्वंसी वीर करहिं गाजा॥ ६॥

युद्धभूमि से आये तत्काला। निज प्रदेशवश राखहिं भाला॥

किन्तु प्रबल सेनारिपु आई। राजा सुरथ पर कीन्ह चढ़ाई॥७॥

**राजा का बल क्षीण भया, मंत्रिन घात लगाय।**

**सेवक दुष्ट दुरात्मा, कोष सैन्य हथियाय॥ ८॥**

सुरथ प्रभुत्व नष्ट जब जाना। अश्व बैठि वन कीन पयाना॥ ९॥

मेधा मुनि का आश्रम देखा। अद्भुत दृश्य जो परम अनोखा॥

हिंसक जीव रहहिं एक संगा। शिष्य करहिं शोभित वन संगा॥ १०॥

**मुनि सत्कार सुरथ नृप कीन्हा।**

**रहहिं करहिं विचरण कछु दीना॥ ११॥**

पुनि ममता वश चिन्तित रहहीं। मम पूर्वज कस पालन करहीं॥

मुझसे हीन नगर अस जाना। मन पीड़ित पूर्व ध्यान जो आना॥ १२॥

दुष्ट भृत्य कस करे धर्म रक्षा। समझि न परहिं कस होय सुरक्षा॥

मद वर्षा नित करहि अति शूरा। रिपु अधीन दुःख पाय जरूरा॥ १३॥

**धन भोजन हित चलहि जो पाछे।**

**अन्य शासक अनुसरहिं न आछे॥ १४॥**

धन की जब बर्वादी करहीं। जमा कोष मम सब चलि जहहीं॥ १५॥

**कष्ट पाय जोड़ा जिसे, नष्ट होय दुःख होत।**

**इस प्रकार से सोचते, सुरथ का पार्थिव सोच॥ १६॥**

आश्रम निकट वैश्य नृप देखा। पूछहिं नाम, ग्राम और लेखा॥ १७॥

कारण शोक कहहु मम ताता। प्रेम वचन थे सुख के दाता॥ १८॥

भाव सहित करि दण्ड प्रणामा। आगे कहहि कथा निज नामा॥ १९॥

**वैश्य बोला॥ २२॥**

धनिक वंश दियो जन्म विधाता। नाम समाधि कहहिं तब ताता॥ २१॥

धन लोलुप सुत, पत्नी दुष्ट हो ही। घर बाहर कर दीन्हा मोही॥

विश्वसनीय बंधु मम भ्राता। धन कारण हुआ दूर का नाता॥

धन,दारा, सुत वंचित ताता। मन पीड़ित कुछ और न भाता॥ २२॥

इस दुःख से पीड़ित हो राजन। छांड़ि कुटुम्ब मैं आयऊ कानन॥ २३॥

रहहुं यहाँ, नहीं मिले घर बाता। चिन्ता स्वजन होत मोहि ताता॥

क्या सब कुशल रहहि गृहवारा। कष्ट पांइ या इह संसारा॥ २४॥

मम सुत रहहिं कैसे सदाचारी। या फिर सब हो गये कुचारी॥ २५॥

**राजा बोला**

**लोभी पत्नि पुत्रजन, धन कारण ही भगाय।**

**उन्हें याद क्यों करत हो, प्रेम बंधन न सुहाय॥ २७-२८॥**

**वैश्य बोला**

वैश्य कहहिं तुम कहो सब साँचा। मम विषय सब ठीक ही जाँचा॥

पितृ स्नेह न पति प्रति प्रेमा। आत्मीय जन त्यागे सब नियमा॥

यह सब धन लालच वस जाना। घर से बाहर कीन्ह सुजाना॥

मम मन निष्ठुरता न धरहिं। हृदय प्रेम उनके प्रति करहिं॥

महामते क्या होय, क्यों होई। गुणहीनों संग प्रेम क्यों होई॥

मैं जानहु प्रभु मोर सुभाऊ। तदपि न समझहुँ मन गति राऊ॥

उन्हें याद लेहुँ गहरी स्वाँसा। हिय अति दुःखी रही न आसा॥
प्रेम अभाव सर्वथा करहीं। तदपि न मन निष्ठुर मम भयहीं॥३४॥

**मार्कण्डेय जी कहते हैं**

सुरथ समाधि मिलहिं एक साथा। मेधामुनि सेवहिं दोऊ माथा॥३६॥
जथा जोग और न्यायक मूला। कहहिं विनम्र वात अनुकूला॥३८॥

**राजा ने कहा॥**

कहँ राजा मुनि हमहिं बतावहि। एक बात पूछहिं मन भावहिं॥४०॥
मम चित वश नहिं कारण जाना। वश इस कारण दुःख सुजाना॥
राज्य विहीन, न कछु मम हाथा। ममता रमी उनमें क्यों नाथा॥४१॥
मुनिश्रेष्ठ! यह नहिं कछु मेरा। तदपि दुःखी, अज्ञान अन्धेरा॥
वैश्य दुःखी अपमानित घोरा। दारा सुत सेवक मुँह मोड़ा॥४२॥

**स्वजनों ने छोड़ा हमें, अधिक मोह क्यों तात।**
**दुःखी रात दिन रहत है, समझि न आवहि बात॥४३॥**

दोऊ मोह में फँसे मुनीशा। समझदार, नहीं दीखहि दीशा॥
जस विवेक से हीन नर माहीं। तस हम दीखें मूढ की नाई॥४४-४५

**ऋषि बोले**

विषय ज्ञान सब जीवहिं जोई। कहहिं ऋषि महाभाग से सोई॥४७॥
सबहिं भिन्न सब विषय लखाहीं। कछु देखें दिन अति हरषायी॥
रात न देखहिं जग कछु प्राणी। राजन सुनो अटपटी ये वाणी॥४८॥
जीव जगत् में रहे कछु ऐसे। देखहिं रात दिवस एक जैसे॥
ज्ञानी मानव ठीक ही जाना। पर आवश्यक नहीं सुजाना॥४९॥
पशु पक्षी और मृग पहिचानो। समझदार तुम उन्हें भी मानो॥
वैसी ही समझ बसहिं नर माही। जैसी मृग पक्षिन में कहाही॥५०॥

**जैसी होय मनुष्य में, वैसी पशु पक्षी होत।**
**अन्य कई बातें हों सम, नर-पशु एकसी होत॥५१॥**

समझदार पशु पक्षिन देखहिं। खुद भूखें पर ध्यान न देहहिं॥
मोहवश सन्तति चुगा देहीं। बड़े चाव से वे ले लेहीं॥५२॥
क्या तुम नहिं देख हुँ नरश्रेष्ठा। यह सब नर समझहिं है ज्येष्ठा॥
तदपि लोभवश करे अभिलाषा। प्रत्युपकार करहिं ये आसा॥५३॥
यद्यपि सब समझहिं अस जाना। जग स्थिति महामाया पहचाना॥
ममता भँवर युक्त सब वह ही। मोहसिक्त हो गर्वहिं गिरहीं॥
कछु आचरज न मानहुँ प्राणा। योगनिद्रा जगदीश्वरि जाना॥५४॥
यह जग सब मोहित उन आला। ज्ञानिन चित्त बलहिं मोह डाला॥
सकल सृष्टि निर्मित करे वो ही। यह माया जानहि नहीं को ही॥
होवहिं जवहिं प्रसन्न भवानी। नर हो मुक्त पाय वर दानी॥
पराविद्या संसारहिं बाँधहिं। सनातनी मोक्ष हित साधहिं॥
सकल जगत् की तुम परमेश्वरी। ईश्वरों की हो तुम ही अधीश्वरी॥५८॥

**राजा कहते हैं॥५९॥**

जिनको महामाया प्रभु कहहीं। देवि कौन, प्रकटत कस भयहीं॥
कथा चरित्र सुनावहु मोही। सकल मुनिन में श्रेष्ठ तुम हो ही॥
देवी प्रभाव, स्वरूप बखानहु। कस प्रकटी सुनना हम चाह हुँ॥६२

**ऋषि कहते हैं॥६३॥**

नित्य स्वरूपा देवि कहु जानो। सकल जगतमय उनको मानो॥
सकल विश्व व्यापक करि राखा। जग उत्पत्ति बहु विधि भाखा॥
यद्यपि नित्य अजन्मा कहहीं। तदपि देव हित प्रकटत भयहीं॥६५॥
सागर निमग्न होय जल सारा। कल्पांत प्रकटे शक्ति अपारा॥
योगनिद्रा आश्रय ले सोंही। शैष शैय्या विष्णुजी सो ही॥६६॥

**दोऊ कानन मल असुर दो होंही।**
**मधु कैटभ बलसाली वोही॥६७॥**

ब्रह्मा नाभि कमल मयि देखा। उनके बध की सोचहिं रूपरेखा॥

असुर भयानक पास अवलोकहिं। विष्णु शयन करत तव सोचहिं॥६८

विष्णु केहि विधि जागहिं ताता। नयन बसी योगनिद्रा माता॥६९॥

स्तुति गावहुँ विश्व अधीश्वरी। धारहिं पालहिं संहारहिं ईश्वरी॥७०॥

शक्ति विष्णु की तेजस्वरूपा। ब्रह्मा स्तुति करहिं नींद रूपा॥७१॥

**ब्रह्मा जी ने कहा॥७२॥**

ब्रह्मा कहहिं देवि! स्वाहा जानी। स्वधा वषटकार स्वरहिं समानी॥७३॥

जीवनदायिनी सुधा तव नामा। प्रणवाक्षर अ,उ, म तव धामा॥

तीन मात्रा में स्थित रहो ऐसे। अर्धमात्रा बिन्दु रूपहिं जैसे॥७४॥

तुम ही धरहु विशेष रूप माता। मुख उच्चारित कस हो पाता॥

तुम संध्या, सवित्री जननी। विश्व ब्रह्माण्ड की धारण करणी॥

जगत सृष्टि तुम ही सन होई। पालन जगत करो तुम्ह सोई॥७५॥

अन्तकल्प का जब ही आता। अपना ग्रास बनावहुँ माता॥

जग उत्पत्ति क्षण हो सृष्टिरूपा। पालन काल स्थिति स्वरूपा॥

संहारक रूप धरि कल्पान्ता। सृष्टि विलीन सकल हो शान्ता॥७६॥

तुम्ही महाविद्या महामाया। महामेधा स्मृति रूप पाया॥

महामोह रूप को धारण करही। महादेवी कभी महासुरी धरही॥७७॥

**सत रज तम गुण धारती, यह प्रकृति गुण खान।**

**सदा सुखी वे जीव हैं, सेवहि तोय समान॥७८॥**

कालरात्रि भयंकर तव रूपा। महारात्रि मोहरात्रि अनूपा॥

तुम श्रीं ह्रीं ईश्वरी मम माता। बोधिस्वरूपा बुद्धि की दाता॥७९॥

लज्जा, पुष्टि, तुष्टि तव नामा। शान्ति क्षमा तुम आवहु कामा॥

खड्ग शूलधारिणी तुम माता। गदा चक्र घोररूप सुहाता॥८०॥

शंख चाप बाण परिघ भुशुण्डी। ये सब अस्त्र धारहिं मां चण्डी॥

सौम्य सौम्यतर दींखहिं माता। अति सुन्दर तुम सुन्दरी माता॥८१॥

पर और अपर रहहि परमेश्वरी। सर्वस्वरूप देवि तुम ईश्वरी॥

सत और असत वस्तु जग माहीं। सबहिं शक्ति तव मातु समाही॥८२॥

क्या स्तुति तव करही माता। हम बालक तेरे अज्ञाता॥८३॥

सृष्टि रचहिं, पालहिं, संहारत। अस प्रभु निद्राधीन कहावत॥८४॥

को समर्थ तव स्तुति हेतु। शिवहिं विष्णु तुम तीनहु सेतु॥

स्तोत्र तुम्हार करहु केहिं भाँती। उदार प्रभाव प्रशंसहि पाती॥८५॥

**मधु कैटभ दोऊ असुर हैं, इन्हें मोह में डाल।**

**विष्णु जागें शीघ्र ही, बने वे इनके काल॥८६॥**

ऐसी बुद्धि माँ दो तत्काला। मरहिं शत्रु जो है विकराला॥८७॥

**ऋषि कहते हैं॥८८॥**

योगनिद्रा तमोगुणी अधिष्ठात्री। ब्रह्मा विनय करहि जग मातृ॥

विष्णु करहिं मधुकैटभ नाशा। कहें ऋषि राजन् करते आसा॥८९॥

नेत्र मुख नाक हृदे भुजा छाती। ब्रह्मा सन्मुख खड़ी ह्वै जाती॥९०॥

योगनिद्रा से मुक्त भये स्वामी। उठे विष्णु जग अन्तर्यामी॥९१॥

देखा दोऊ दुष्टन भगवाना। मधु कैटभ थे अति बलवाना॥९२॥

क्रोधहिं नयन लाल करि पाई। ब्रह्मा लीलन की करहिं उपाई॥

श्री हरि वाहु युद्ध जो कीन्हा। पाँच हजार वर्ष संग्रामहि कीन्हा॥

दोऊ उन्मत भये बल कारण। महामाया व्यापी आनन फानन॥९४॥

देखि वीरता हम भये राजी। विष्णु सन कहे वर लो माँगी॥९५॥

**भगवान् बोले॥**

**यदि मोपे प्रसन्न तुम, मरहिं मेरे वार॥९७॥**

**इतना वर ही चाहिए, अन्य में न कुछ सार॥९८॥**

**ऋषि कहते हैं॥**

**धोखा पाया उन्होंने, जल ही जल विस्तार।**

**कमलनयन भगवान से, बोले बचन उचार॥१००॥**

**पृथ्वी जब ऊपर रहे, सूखा हो स्थान।**

**वहीं हमारा वध करो, हे पूरण भगवान॥ १०१॥**

**ऋषि कहते हैं॥ १०२॥**

शंख चक्र गदा हाथ में धारहिं। जस चाहहुँ तस ही हम आवहिं॥

सिर दोऊ के निज जंघा राखी। काटे चक्र सबहिं की साखी॥ १०३॥

स्तुति सुनी ब्रह्मा की जब ही। महामाया क्षण प्रकटत भयही॥

कहहिं ऋषि सुनो राजन वाता। अब उनके प्रभाव सुन ताता॥ १०४॥

**॥प्रथम अध्याय संपूर्ण॥**

पीड़ा जन जन की हरो, करो सदा शुभ कर्म।

मंत्र यही सच्चा सुजन, यही धर्म का मर्म॥

खान-पान हो शुद्ध यदि, तन-मन स्वस्थ ही जान।

इससे अच्छा सुख कहाँ, जग में पाय सुजान॥

# द्वितीय अध्याय

## विनियोग

मध्यम चरित्र विष्णु ऋषि, महालक्ष्मी देवता जान।
उष्णिक छन्द शाकम्भरी, वायु तत्त्व पहिचान॥
यजुर्वेद के स्वरूप में, यज्ञ माहात्म्य बताय।
महालक्ष्मी प्रसन्न हो, विनियोग कर हरषाय॥

## ध्यान

बैठी जो कमलासनहि देवि, प्रसन्न मुख, सुखदायिनी।
महालक्ष्मी को भज ले मना, महिषासुर मारन हारिनी॥
निज हाथ अक्षमाला धरे, फरसा गदा धनुधारिणी।
तलवार ढाल कठोर सोहत, घण्ट, शंख ध्वनि झंकारिनी॥
मधु पात्र हाथ लिए हो तुम, शूल पाश अरू चक्रधारिणी।
जय मातु शाकम्भरी जय हो, निज भक्त की हो तारिणी॥

**ॐ ह्रीं ऋषि कहते हैं॥ १॥**

देव और असुर युद्ध भयो भारी। सौ वर्षों तक सब दुखियारी॥
असुर स्वामी महिषासुर नामा। युद्ध नायक इन्द्रदेव बलधामा॥ २॥
देवन की सेना सब हारी। इन्द्र की गद्दी महिषासुर मारी॥ ३॥

हारे देव ब्रह्मा संग जाई। शंकर और विष्णु विराजत पाई॥
देव दनुज संग्राम बखानी। महिषासुर की कही कहानी॥४॥
हे दोऊ देव! यथार्थ वतावहि। हम हारे जस तुम्हें सुनावहिं॥५॥
सूर्य, चन्द्र अग्नि वायु मानहिं। यम और वरुण इन्द्रादिक जानहिं॥
महिषासुर इन्द्र राजहि छीना। अधिष्ठाता खुद को है कीना॥६॥
दुष्ट महिष सब देव निकाला। मर्त्य लोक जन घूमहिं वहु काला॥७॥
सब करतूत कहहिं हम ईशा। शरण पड़े, हल करो जगदीशा॥
महिषासुर वध कैसे होई। हमें उपाय बतावहुँ सोई॥८॥
वचन सुने शिव विष्णु मन रोषा। तनी भौंह क्रोधित मुख सहसा॥९॥
विष्णुमुख तेज प्रकट भयो जाना। कोप भयानक जब जग माना॥
सबहिं देव तन निकसहिं तेजा। शिव ब्रह्मादि इन्द्र तन सहजा॥
तेज शक्ति भई मिलकर एका। विचित्र स्थिति सब कोई देखा॥१०-११
धधकहिं ज्वाल पुंज गिरि जैसे। व्यापहिं ज्वाल चतुर्दिशि ऐसे॥१२॥

**देवन सभी प्रकाशमय, तुलना कसि विधि होय।**
**तेज पुंज नारी भई, तीन लोक ज्योति होय॥१३॥**

शिव तेजहि प्रकट्यो मुख माता। यमहि तेज शिर केश दिखाता॥
दोऊ भुज उपजि विष्णु तेज द्वारा। उत्पत्ति क्रम कहहिं न पारा॥१४॥
स्तन दोऊ शशि तेजहिं जाना। कटि प्रदेश इन्द्र ज्योति प्रदाना॥
पिंडली जंघन वरुण कृपा जानी। बने नितम्ब भू तेज भवानी॥१५॥
तेज चरण दो ब्रह्मा दीना। सूरज तेज अंगुलिन भरि लीना॥
हाथ अंगुलिन वसु दीन्हा तेजा। प्रकटी नाक कुवेरहि तेजा॥१६॥
दंत प्रजापति किया निर्माणा। नेत्र तीन अग्निदेव अनुदाना॥१७॥
संध्या भौंहहि रूप प्रदाना। वायुदेव उपजाये दोई काना॥
कल्यायमयी प्रकट भई ऐसे। देवन तेज पाइजस जैसे॥१८॥
देवन शक्ति अंश धरि माता। भये प्रसन्न सब सुख की दाता॥१९॥

शूलहिं एक पिनाक शिव दीना। विष्णु चक्र से चक्र को दीना॥ २०॥
वरुण शंख, शक्ति अग्नि दीनी। पवन धनुष तरकस दे दीनी॥ २१॥
इन्द्रदेव वज्र करहिं प्रदाना। घण्टा ऐरावत से है आना॥ २२॥
यम कालदण्ड से दण्डहिं देही। वरुण के पाश बाँधि नर ले हीं॥
स्फटिक माला प्रजापति दीना। ब्रह्मा कमण्डलु देविहिं दीना॥ २३॥
सूर्य तेज रोम रोम समाना। काल दीन्ह असि ढाल सुजाना॥ २४॥
उज्ज्वल हार क्षीरसागर देहीं। दिव्य दोऊ वस्त्र जीर्ण न होही॥ २५॥

**चूडामणि कुंडल कड़े, अर्धचन्द्र भाषित जान।**
**सब वाहुन केयूर दिये, नूपुर चरण प्रदान॥ २६॥**
**हँसली सुन्दर गले में, अँगूठी रत्न निर्माण।**
**अति निर्मल फरसा प्रभु, विश्वकर्मा किया प्रदान॥ २७॥**

अस्त्र अनेक जो विविध प्रकारा। कवच अभेद्य दीन सुखकारा॥
हो न मलीन कवहुं अस काला। वक्षस्थल सिर कमल की माला॥ २८
जलधि सरोज पुष्प दे दीन्हा। अति सुन्दर धारण कर लीन्हा॥
सिंह सवारी हेतु हिम देंही। रत्न अनेक हिमालय देही॥ २९॥
पानपात्र मधु दीन्ह कुवेरा। नागराज शेष कीन्ह नहीं देरा॥
नागहार सुन्दर मणि युक्ता। भेंट दीन्ह वहु कीमती मुक्ता॥ ३०॥
अन्यदेव आभूषणहि दीन्हा। अस्त्र शस्त्रन सम्मानित कीन्हा॥ ३१॥
अट्टहास उच्चरहिं घोरा। नाद भयंकर गगन भयो शोरा॥ ३२॥
सिंहनाद माता न समाई। लघु प्रतीत आकाश ह्वै जाई॥
प्रतिध्वनि भई घोर अपारा। कांपे सागर, हलचल संसारा॥ ३३॥
महि डोलहि गिरि कांपन लागा। देव प्रसन्न होहिं अनुरागा॥
सिंहवाहिनी मातु भवानी। तुमरी जय जय जय कल्याणी॥ ३४॥
भाव भक्ति सन विनती कीन्हा। स्तवन पढ़ि सबहीं सुख दीन्हा॥
क्षोभग्रस्त त्रैलोकहिं देखा। सैन्य सजा रचहि रूपरेखा॥ ॥ ३५॥

कवच अभेद्य हाथ हथियारा। खड़े लड़न को बली अपारा॥

**महिषासुर क्रोधहिं भरा, मन डोला क्या राज।**

**सिंहनाद की ओर सब, चहुदिश सैन्य समाज॥३६॥**

सन्मुख देवी पड़ी दिखाई। तीन लोक आभा जस छाई॥३७॥

चरण भार पृथ्वी धँसि जाई। माथे मुकुट रेख खिच जाई॥

धनु टंकार करहिं जब माता। सप्त पाताल क्षुब्ध हो जाता॥३८॥

मातु भुजा सब दिशा पसारी। सहस्र भुजा देवी तन धारी॥

युद्ध तदन्तर भयहु सुजाना। दैत्य देवी संग खीचमताना॥३९॥

अस्त्रशस्त्र सब विविध प्रकारा। उद्भाषित दिक सकल प्रकारा॥

असुर महा चिक्षुर अस नामा। सेना नायक महिषासुर धामा॥४०॥

युद्ध करन देवी संग लागा। चतुरङ्गिनी चामर ले आगा॥

उदग्र महादैत्य की गाथा। साठ हजार रथियों के साथा॥४१॥

एक करोड़ रथी संग भय देखा। महा हनु युद्ध करहिं विशेषा॥

तीव्र रोम असि धार समाना। पाँच करोड़ रथी असिलोम जाना॥४२॥

साठ लाख रथियों से धिरा जो होई। वाष्कल युद्ध करहिं रण सोई॥

हाथी सवार परिवारित दल अनेका। एक करोड़ रथी युद्ध लड़े एका॥

पाँच अरब रथी मिलि लें लोहा। दैत्य विडाल रण वीचहि सोहा॥

दैत्य सहस्र लड़हि देवी संगा। रथ गज अश्व सैन्य सब अंगा॥

युद्ध भूमि महिषासुर दीखहिं। सहस्रकोटि रथ अश्व गज चीखहिं॥

**दैत्य युद्ध रत है सभी, तोमर, भिन्दिपाल साथ।**

**मूशल शक्ति खड्ग और, पट्टिश परशु है हाथ॥**

शक्ति प्रहार करहिं सब भारी। पाश देवि पर फैंकहिं भारी॥४८॥

खड्ग प्रहार देविहि पर करही। जेहि विधि मरे देवी सो करही॥

अस्त्र शस्त्र वर्षहिं करि कोपा। दैत्यन खेल खिला वहि रोपा॥

नहीं थकान चिह्नमुख माता। स्तुति करहिं देव ऋषि ताता॥

दैत्य शरीरहि करत प्रहारा। अस्त्र शस्त्र वरषहिं अति भारा॥
वाहन सिंह क्रोध जब करहीं। गर्दन बाल हिलावत रहहीं॥
दैत्य संग युद्ध माता करहीं। अम्बिका जब निश्वास भरहिं॥४९-५३॥
सत सहस्त्रगण तव प्रकटाये। असुर सामने अस्त्र फैलाये॥
शंख नगाड़े बजावहिं वोहि, देवी शक्ति असुर नाशहिं होही॥
उस संग्राम समर के माहीं। मृदङ्ग बजावहिं मिलि के जाही॥
खड्ग त्रिशूल गदा से काला। शक्ति वर्षा दैत्यन मारि डाला॥
दैत्य अनेक मूर्च्छित जब होई। घोर नाद घण्टा सुने जोई॥
पाश बांधि असुर धरा पसारे। दोऊ दोऊ टूक दैत्य कर डारे॥
गदा चोट आहत भू सोहीं। रक्त वमन मूसल से हो ही॥
छाती कटहिं शूल के लागे। दैत्य ढेर सब भये अभागे॥
वाण वृष्टि रणभू पर होई। टूटी कमर असुर केहि केही॥
बाज भाँति झपटहि असुरारी। देवपीडक दैत्य प्राण विसारी॥
छिन्न भिन्न बहु भुजा गवांई। कितनों की गरदन कटि जाई॥
दैत्यन मस्तक कटि कटि गिरही। मध्य भागविदीर्ण कुछ भयहीं॥

**जंघा कटि भू पर गिरे, शरीर चीर दो भाग।**
**दैत्यों के सिर कटें जब, पुन उठि लड़े न भाग॥**

नाचहिं युद्ध, नाद कछु होही। बाजे बजे कवन्ध जस सोही॥६३॥
बिनु सिर के धड़ खड्ग धारहि। शक्ति ऋष्टि लेके सब धावहिं॥
ठहरो ठहरो दैत्य पुकारत। युद्ध हेतु देविहिं ललकारत॥६४॥
घोर संग्राम भयो अति भारी। असुरन लाश भूमि परी सारी॥
रथ गज अश्व पड़त दिखलाई। चहल कदमी न होवे भाई॥६५॥
असुर शरीर रक्त वहे भारी। लोहु नदी जस वहत अपारी॥६६॥
सैन्य विशाल असुर क्षण मारी। जगदम्बा की शक्ति अपारी॥६७॥
आग भस्म क्षण में करे भारी। तृण और काठ करे क्षण क्षारी॥६८॥
गर्जहिं सिंह प्राण हर लीना। बाल हिलाय गर्जना कीन्हा॥
देवीगण महादैत्य सन लड़ही। नभ से देव सुमन बहु वर्षही॥६९॥

**॥द्वितीय अध्याय संपूर्ण॥**
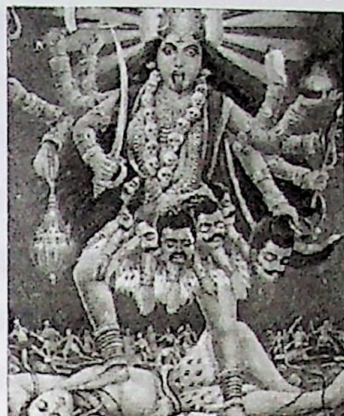
# तृतीय अध्याय

## सेनापतियों सहित महिषासुर वध

### ध्यान

जगदम्बे कान्ति निराली सोहे, सूर्योदयी अंग लालिमा।
रेशम की साड़ी लाल सोहे, मुण्डमाल गल में धारे मा॥
स्तन दोऊ, चन्दन लिपे, कर में कमल है शोभहिं।
विद्या अभय वर नाम से, मुद्रा प्रदर्शित हो रहीं॥
त्रयनेत्र मुख सुन्दर बना, सिर पर मुकुट रत्नों सजा।
मैं भक्ति युक्त प्रणाम करता, कमल आसन बैठो आ॥

**ॐ ऋषि कहते है॥ १॥**

दैत्य सैन्य नाशहिं जब देखा। चिक्षुर क्रोधित भयहु विशेखा॥
महादैत्य सेनापति भारी। युद्ध हेतु अम्बिका अगाड़ी॥ २॥
वाण वर्षा देवी पर करही, रणभूमि में स्वयं वह लड़ ही॥
मेरु शिखर बादल जस वरषहिं। तीव्र धार जल की ज्यों सरसहिं॥ ३॥
तब देवी निज बाण चलाए। अश्व सारथी मार गिराये॥ ४॥
धनुष ध्वजा काटहिं तत्काला। तीरन अंग बींध तब डाला॥५॥
रथ घोड़े सारथि धनु मारा। असुर ढाल, तलवार किया वारा॥६॥

तीक्ष्ण कृपाण सिंह मस्तक मारा। वायीं भुजा पर कीन्ह प्रहारा॥७॥
असि टूटी देविहिं भुजा जाही। राक्षस शूल हाथ में पाही॥८॥
भद्रकाली पर दीन चलाई। मरा दैत्य निज शक्ति दिखाई॥
नभ से गिरत शूल अस होई। सूर्य मण्डल सम जलती होई॥९॥
आवत देखि शूल निज पासा। देविहिं शूल चलावहिं आसा॥
राक्षस शूल नाशहि शतरूपा। चिक्षुर मरा होय क्षत रूपा॥१०॥
महिषासुर नायक अति जोधा। चिक्षुर मरण सुनि उपजा क्रोधा॥
जो देवन पीड़ा पहुँचावत। चामर चढ़ि हाथी पर आवत॥११॥

**शक्ति प्रहारहि देवि पर, अम्बा भरि हुँकार।**
**राक्षस आहत हो गये, निष्प्रभ भूमि पै डार॥१२॥**

टूटी शक्ति गिरी जब देखा। चामर क्रोध, मस्तक भय रेखा॥
शूल चलाय कीन्ह तब वारा। देवी बाण काटहिं शूल धारा॥१३॥
देवी सिंह उछलहिं तत्काला। जा बैठा हाथी के कपाला॥
दैत्य संग लड़हें भरि जोशा। वाहु युद्ध भीषण वहु रोशा॥१४॥
लड़त लड़त दोऊ नीचे आये। समर भयंकर दोऊ मचाये॥१५॥
उछल के सिंह आकाश पे जाई। तीव्र गति जो न कहि जाई॥
गिरत समय पंजन से मारा। चामर सिंह धड़ से किया न्यारा॥१६॥
दैत्य उदग्र देवी ने मारा। शिला वृक्ष के तन भयो क्षारा॥
मुक्का दन्त थपेड़े खावहिं। मरा कराल धरा गिर जावहिं॥१७॥
क्रोधित देवी निज गदा चलावहिं। उद्धत चीरचीर करि डालहिं॥
भिन्दिपाल ले वाष्कल मारा। बाणन ताम्र अंधक मृत्यु सिधारा॥१८॥
तीन नेत्र कर देवि त्रिशूला। महाहनु, उग्रास्य, उग्रवीर्य किये धूला॥१९
मस्तक धड़ से काट गिराया। विडाल ऊपर तलवार चलाया॥
दुर्धर दुर्मुख थे दोऊ वीरा। बाणन से यमलोक गये धीरा॥२०॥
सैन्य संहार देखि महिषासुर। भैंसा रूप धरि आवहिं आतुर॥

देवीगण सब भयहु दुखारे। पाहि त्रास असमंजस भारे॥ २१॥

**थूथुन से मारहि कछुक, खुरों से कीन्ह प्रहार।**

**पूँछ से चोट मारता, सींगों रहा विदार॥ २२॥**

**वेगहिं मरे कछुकगण, सिंहनाद मरि जात।**

**कछु चक्कर निश्वास से,धराशायी ह्वै जात॥ २३॥**

गणसेना को गिरावत वो ही। देवि सिंह सन झपटा निर्मोही॥

देवी भाव देखहिं अस जोधा। जगदम्बा को भयो अति क्रोधा॥ २४॥

क्रोधहिं भरि महिषासुर रौंदा। खुरों से धरती जाइ के खोदा॥

गिरि विशाल सींगनहि उठावहिं। फैंक उन्हें गर्जहि और धावहिं॥ २५॥

चक्र वेग पा भू दुःख भारी। फटहिं जमीन भयंकर भारी॥

असुर पूँछ टकरावहि सागर। पृथ्वी डूबहिं जल को पाकर॥ २६॥

सींग आघात हिलहिं जब जाना। टूटहिं बादल कणहिं समाना॥

असुर श्वास शत गिरिन उड़ायी। गिरहिं प्रचण्ड वेग नभ माही॥ २७॥

क्रोधित दैत्य आबत जब देखा। वध हित क्रोध कीन नहिं लेखा॥

पाशु फैंक देवी असुरहिं बाँधा। रूप त्याग निशाना फिर साँधा॥ २८॥

सिंह रूप प्रकटा तत्काला। जगदम्बा आई बनि काला॥ २९॥

सिर काटन की कीन्ह तैयारी। धारा रूप असुर खड्गधारी॥ ३०॥

**वाणों से वींधा उसे, हाथ में लेकर ढाल।**

**असुर की लीला क्या कहें, गजराज भयो तत्काल॥ ३१॥**

सिंह विशाल देविहि कर जानी। गर्जहि सूंड करे खींचातानी॥

देवी तब तलवार चलावहिं। सूंड काटि एक ओर को डालहिं॥ ३२॥

महादैत्य धरि भैंसे के रूपा। पुनः करें सब पूर्व अनूपा॥

चर और अचर प्राणि जग सारे। तीन लोक सब भये दुखारे॥ ३३॥

तब क्रोधहिं भरि चण्डिका काला। मधु पी हंसी नेत्र भये लाला॥ ३४

दैत्य पराक्रम बल नहिं थोरा। मदोन्मत्त गर्जहिं अति घोरा॥

सींगन पर्वत लेत उखारा। चण्डी देवी पर कहहिं प्रहारा॥ ३५॥
तब देवी निज बाण चलावत। सकल पहाड़ चूर्ण करि डारत॥
मधु के मद से लाल मुख होई। बोलत समय वाणि क्षर होई॥ ३६॥

**देवी कहती है॥ ३७॥**

जब तक मधु पीऊं ओ मूढ़ा। तब तक गर्ज तू मंद विमूढा॥
मृत्यु होय अब जान सुजाना। देव करहिं गर्जन सब जाना॥ ३८॥

**ऋषि कहते हैं॥ ३९॥**

यों कह देवी भरी उछाला। महादैत्य पै चढ़ी तत्काला॥
निज पद दाबि असुरकरि वारा। शूल से कण्ठ पै कीन्ह प्रहारा॥ ४०॥
देविहिं पैर दबा महिषासुर। दूजा रूप धरने को आतुर॥
तब देवी करि अस अनुमाना। निज प्रभाव अर्ध रोकत जाना॥ ४१॥
युद्ध देवी सन करे अर्ध शरीरा। मस्तक काटि गिरावहि वीरा॥ ४२॥
हाहाकार करि सेना गई दूरा। देव प्रसन्न होत भरपूरा॥ ४३॥

**देव सभी स्तुति करें, दिव्य ऋषिन के साथ।**
**गीत गाये गन्धर्व सब, अप्सरा नाचहिं साथ॥ ४४॥**

॥तृतीय अध्याय संपूर्ण॥

मूर्ति को न पूजते, गुण ही पूजे जात।
ध्येय हमारा एक है, ध्यान धरे जो ध्यात।

श्रद्धा हो जब एक में, मिले एक भगवान्।
निष्ठा से पूजन करो, पाओगे वरदान॥

# चतुर्थ अध्याय

## इन्द्रादि देवताओं द्वारा देवी की स्तुति

**ध्यान**

सिद्धि के इच्छुक पुरुष सेवें देवों से घिरी दिखावती।
उन जया दुर्गा ध्यावही, कृष्ण मेघ अंग सुहावती।।
अरिकुल डरे कटाक्ष तेरे, चन्द्ररेखा माथे शोभही।
शंख चक्र शोभित हाथ में, कृपाण त्रिशूल आभा होरही।।
त्रय नेत्र धारण करे माता, सिंह पे शोभा पावहीं।
त्रयलोक आलोकित किये, चरणों में हम सब ध्यावहीं।।

**ऋषि कहते हैं।। १।।**

अति योद्धा महिषासुर जानी। दैन्य सैन्य नष्ट कीन भवानी।।
इन्द्रादिक सब करहिं प्रणामा। दुर्गा स्तोत्र गावहिं अभिरामा।।
रोम रोम पुलकित सब अंगा। रोमाञ्चित क्षण हर्ष प्रसंगा।।
देवि शक्ति सब जगत समाई। शक्ति समूह सब देवन छाई।।
पूजनीय ऋषि देवन दाता। नमन करे कल्याण करो माता।। ३।।
तव प्रभाव बल कहा न जाई। शेष महेश ब्रह्मा समर्थ नाही।
सकल जगत पालन करो माता। अशुभ भयहिं दूरि करो त्राता।। ४।।

पुण्यात्मा घर लक्ष्मी स्वरूपा। पापिन गृह दारिद्री के रूपा॥
शुद्ध हृदय जन बुद्धि प्रकाशा। श्रद्धा लज्जा कुलीन जन वासा॥
माँ भगवती नमन हम करहीं। सकल विश्व पोषण तुम करही॥५॥
अचिन्त्य रूप जो न कहि जाई। असुर नाश कर शक्ति दिखाई॥
देव दैत्य जो चरित्र प्रकटाई। केहिं विधि करहिं हमें न भाई॥

**जगत सकल पैदा किया, सत रज तम की खान।**
**दोषों से हो मुक्त मा, विष्णु शिव अनजान॥७॥**

अंशभूत सब आश्रयी दाता। परा प्रकृति आदि भूत हो माता॥
देवी यज्ञ में तुम ही हो स्वाहा। देव सुखी सुनि मंत्र जो आहा॥
तृप्ति मिले पितरों से माता। स्वधा शक्ति की तुम हो दाता॥८॥
तुम्हीं मोक्ष साधन की स्वरूपा। चिन्ता रहित महाव्रत रूपा॥
दोष रहित इन्द्रिय जय भर्ता। मानहिं सार वस्तु तत्त्वकर्त्ता॥
मोक्ष इच्छा जो करहिं मुनीषा। पराविद्या तुम भगवती ईशा॥९॥
ऋग् यजुर्वेद की निर्मल धारा। मधुर पाठ सामवेद आधारा॥
वेदत्रयी भगवती तव नामा। जग उत्पत्ति हितवार्ता नामा॥
सकल जगत की तुम्हीं अधारा। पीड़ा नष्ट करहुँ जग सारा॥१०॥
सभी शास्त्र के सार को जाना। मेधा शक्ति सबहिं पहिचाना॥
भव सागर दुर्गम है भारा। दुर्गा नौका रूप भव पारा॥
वक्षस्थल मां लक्ष्मी वासा। विष्णु शत्रु कैटभ कीन नासा॥
चन्द्रशेखर तव करहिं सम्माना। गौरी रूप देवी तव माना॥११॥
मंद मुस्कान सुशोभित आनन। निर्मल चन्द्र बिम्ब प्रकाशन॥
स्वर्ण कान्ति कमनीय मनोहर। महिषासुर देखहिं क्रोधकर॥
बात बड़े अचरज की जानी। दैत्य प्रहार करहिं भवानी॥१२॥
वो मुख क्रोध युक्त भयो तब ही। उच्छित चन्द्र सम लाली जब ही॥
भौंहे तनी, भयानक मुख होई। महिषासुर निष्प्राण तब होई॥

ये है अधिक अचरज की बाता। यमहिं देखि क्रोध, जीवन त्राता॥१३

देवि प्रसन्न होव अस जानी। जग अभ्युदय, प्रसन्न तब जानी॥

यह अनुभव की बात है मानी। महिषासुर सैन्य झट निपटानी॥१४॥

**अभ्युदय करती सदा, जिन पर आप प्रसन्न।**

**वे पाते सम्मान जय, यश धन से सम्पन्न॥**

**धर्म को वे ही पालते, शिथिल न होंवे तात।**

**हृष्ट पुष्ट धन्य मानते, स्त्री सुत मृत्यु साथ॥१५॥**

पुण्यात्मा तव कृपा को पावहिं। श्रद्धा से निज धर्म चलावहिं॥

कर्म करे निज धर्म अनुकूला। स्वर्गलोक पावहिं मन फूला॥

तीन लोक में व्यापक माता। मनवांछित फल की हो दाता॥१६॥

सुमिरन तेरा करहिं जो प्राणी। भय हरती सुख की हो सानी॥

दुःख दारिद्र भय हारिणी माता। तुमरे बिनु न कोऊ भाता॥

करहु सदा उपकार चित्त लाई। दया भाव मन सदा समाई॥१७॥

राक्षस मरें सुख होइ संसारा। नरक वास पाप हों अपारा॥

दैत्य युद्ध मृत्यु जो पावई। स्वर्गलोक में पहुँचत जावई॥

अस विचार माता मन माहीं। शत्रु न वध क्षण भाव बनाही॥१८॥

शस्त्र प्रहार करहुँ क्यों माता। दृष्टि से क्यों न मारहु माता॥

गूढ़रहस्य छुपा यह जाना। शस्त्र स्पर्श मरिश्रेष्ठ लोक पाना॥

शत्रुन सन तव उच्च विचारा। यश गाये तव सब संसारा॥१९॥

खड्ग ज्योति फैले सब ओरा। त्रिशूल आगे घनीभूत था और॥

असुर नेत्र नहीं फूटहि या से। कारण छिपा रहा था माँ से॥

चन्द्र रश्मि सम आनन्द देहीं। तव सुन्दर मुख देखहिं ते ही॥२०॥

दुष्ट व्यवहार मिटे, तव शीला। रूप तुम्हार न चिन्तन अनुकूला॥

तुलना कस विधि करहिं माता। अतुलित बल सब जग विख्याता॥

मातु पराक्रम असुरहिं नाशा। देव पराक्रम असुर न आसा॥

इस प्रकार माँ दया की सागर। निज शत्रुन पर हो करुणाकर॥ २१॥

तुलना केहि विधि करहु तुम्हारी। वरदायिनी पराक्रम तव भारी॥

शत्रुन की भय दायिनी माता। मन हारिणि रूप कहाँ कौन पाता॥

हृदय कृपा, निष्ठुर युद्ध माही। आप सिवा त्रयलोक में नाहीं॥ २२॥

तीन लोक की रक्षक हो माता। शत्रु विहीन सकल जग त्राता॥

जो शत्रु रणभूमि में पाये। मार उन्हें स्वर्ग लोक पहुँचाये॥

दैत्य उन्मत्त भयहुँ जेहिं काला। नमन करूँ, भय दूर करि डाला॥ २३॥

देवि! शूल मम रक्षा करहुँ। खड्ग सुरक्षा हमरी करहुँ॥

घण्टा ध्वनि छाहहिं चहु ओरा। धनु टंकार रक्षा कर घोरा॥ २४॥

चण्डिके रक्षा करहुं हमारी। पूरव पश्चिम दक्षिण में सारी॥

हे ईश्वरि! तिरशूल घुमाओ। उत्तर दिशा से रक्षा कराओ॥ २५॥

तीन लोक विचरहिं तव रूपा। अति सुन्दर और भयंकर स्वरूपा॥

उन सबसे रक्षा करो माता। भूलोक होय सुरक्षित जाता॥ २६॥

कर पल्लव तव शोभा पावहिं। खड्ग त्रिशूल गदादि साजहिं॥

अस्त्र अनेक अम्बिके धारहि। हम सब की रक्षा करिपावहिं॥ २७॥

**ऋषि कहते हैं॥ २८॥**

सब देवन मिलि स्तुति करही। दिव्य पुष्प नंदन वन लहही॥

चन्दन गंध विलेपहिं माता। जगधात्री अर्चन सुख दाता॥ २९॥

सब मिलहिं भक्ति भरि साथा। दिव्य सुगंध धूप लो माता॥

तव देवि! प्रसन्न अभिरामा। देवन देवहि करहि प्रणामा॥ ३०॥

**देवी बोली॥**

देवी कहहिं, देवजन जागो। इच्छित वस्तु को मुझसे माँगो॥ ३२॥

**देवता बोले॥ ३३॥**

सब इच्छा पूरन करो माता। बाकी कुछ नहीं तुम हो दाता॥ ३४॥

शत्रु महा महिषासुर मारा। वरदायिनी, महेश्वरि अस प्यारा॥ ३५॥

याद करहिं जब जब हम गाई। तब तब दर्शन देना आई॥

संकट दुर्गम दूर भगाना। स्तोत्र पाठ जो करहिं सुजाना॥

वित्त समृद्धि वैभव के साथा। धन दारा सम्पत्ति सुख पाता॥३७॥

**ऋषि कहते हैं॥३८॥**

देवन निज अरु जग कल्याणा। राजन् देवि प्रसन्न तव जाना॥

कहत तथास्तु! देवन कही माता। हुई अदृश्य भद्रकाली माता॥३९॥

पूर्व काल त्रयलोक हितकारी। प्रकटी देवि, देव तनुधारी॥

मैं सब कथा कही भूपाला। सुनी ध्यान देकर बहुकाला॥४०॥

देवन की उपकारी माता। सब लोकन की रक्षक त्राता॥

शुम्भ निशुम्भ दैत्य वध कीना। गौरि देवी शरीर धरि लीना॥

वही प्रसंग मम मुख सुनि राजा। कहहुँ यथावत तुमसे आजा॥४१-४२

**॥चतुर्थ अध्याय संपूर्ण॥**

आस्था होय प्रगाढ़ जब, सिद्धि पाय सुजान।
सद्‌गुण आते पास है, पाता है आत्मज्ञान॥

राजनीति, धर्मनीति, बने अखाड़े मंच।
डूबे हैं सिर पैर तक, रचते नये प्रपंच॥

## पंचम अध्याय

**देवों द्वारा देवी की स्तुति, चण्ड-मुण्ड से अम्बिका के रूप की प्रशंसा सुनना, शुम्भ का देवी के पास दूत भेजना और दूत का निराश लौटना।**

### विनियोग

उत्तर चरित्र ऋषि रुद्र हैं, सरस्वती देवता जान।
अनुष्टुप छंद, भीमा शक्ति, सूर्य तत्त्व है प्रमाण॥
स्वरूप सामवेद है, बीजहिं भ्रामरी गान।
महासरस्वती प्रसन्न हो, पाठ विनियोग जान॥

### ध्यान

कर कमल घण्टा, शूल राजे, हल, शंख मूसल सोहहीं।
धनु चक्र बाण हाथ ले, चन्द्र कान्ति शरद ऋतु सोहहीं॥
मन हरण रूप लखाय देवी, त्रयलोक में सुख पावहिं।
शुम्भ आदि दैत्य नाश गौरी, महासरस्वती शीश नवावहीं॥

**ऋषि कहते हैं॥ १॥**

शुम्भ-निशुम्भ दैत्य भये पूर्व काला। आ घमंड बल कीन्ह कुचाला॥
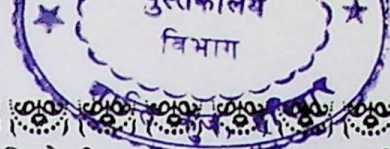
शचिपति इन्द्र त्रिलोकी राजा। यज्ञ भाग, राज छीनहि काजा॥२॥

**रवि, शशि, वरुण कुबेर यम सारा।**

**दोई मिलि इनपे कीन्ह अधिकारा॥३॥**

अग्नि वायु के कारज करहिं। अपमानित सब देवन करहिं॥

कीन्ह पराजित छीने अधिकारा। राज्य भ्रष्ट स्वर्ग से कीन्हे पारा॥४॥

देव भये असुरन से तिरस्कृत। अपराजिता सुमिरें विचार कृत॥

जगदम्बा पूरव वर दीन्हा। आपतकाल सुमिरन तब कीन्हा॥५॥

मैं तुम्हारि रक्षक हूँ ताता। नाश करहुं तव विपत्ति जो पाता॥६॥

अस विचार पहुँचे गिरिराजा। विष्णु माया स्तुति हित साजा॥७॥

**देवता बोले॥८॥**

**देवी, महा देवी नमन, शिवा शक्ति को प्रणाम।**

**भद्रा मातु प्रकृति को, जगदम्बे नित्य प्रणाम॥९॥**

**रौद्रा, नित्या नमन है, गौरिहि धात्री नमस्कार।**

**ज्योत्सना चन्द्ररूपिणी, सुख दायिनी आकार॥१०॥**

शरणागत कल्याण जो करहीं। वृद्धि सिद्धि कई वारहि नमहिं॥

राजलक्ष्मी नैऋति जो होई। शर्वाणी अम्बे नमन करें तोई॥

दुर्गा दुर्ग विनाशनि हारी। सर्व कारिणी 'सारा' सुखकारी॥

'ख्याति' और कृष्णा माँ प्यारी। धूम्रा देवी को नमन हमारी॥१२॥

हो अति सौम्य, रौद्र तुम माता। नमस्कार स्वीकारो त्राता॥

जगत प्रतिष्ठित मातु भवानी। नमन अनेक करहु जगु पानी॥१३॥

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। विष्णु की माया जानो सबहीं॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥१४-१६॥

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। बुद्धि रूप में स्थित रहहीं॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥१७-१९

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। चेतन शक्ति नाम उच्चरहि॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ २०-२२

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। निद्रा रूप ले स्थित भयहीं॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ २३-२५

जो देवी सब प्राणिन रहहीं। क्षुधा रूप बन स्थिर सबहीं॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ २६-२८

जो देवी सब प्राणिन रहहीं। छाया रूप वसहि जग सबहीं॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ २९-३१

जो देवी सब प्राणिन रहहीं। शक्ति रूप में व्यापे सबहीं॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ ३३-३४

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। तृष्णा रूप स्थित है सबहीं॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ ३५-३७

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। क्षमा रूप में व्यापक सबहीं॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ ३८-४०

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। जाति रूप से व्यापक सबही॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ ४१-४३

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। लज्जा रूप धारण सब करही॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ ४४-४६

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। शान्तिरूप में स्थित रहही॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ ४७-४८

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। ब्रह्म रूप मे स्थित रहही॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ ५०-५२

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। कान्तिरूप में स्थिर रहही॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ ५३-५५

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। लक्ष्मी रूप में स्थित रहही॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥ ५६-५८

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। वृत्ति रूप में स्थित रहही॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥५९-६१

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। स्मृति रूप में स्थित रहही॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥६२-६४

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। दया रूप में स्थित रहही॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥६५-६७

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। तुष्टि रूप में व्यापक रहही॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥६८-७०

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। मातृ रूप में स्थित रहही॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥७१-७३

जो देवी सब प्राणिन बसहीं। भ्रान्ति रूप में स्थित रहही॥

उनको नमन नमन है उनको। बार अनेक नमन करूँ उनको॥७४-७६

जीव इन्द्रियन अधिष्ठात्री माता। सब में वसी हो देवी माता॥७७

सकल जगत व्यापहिं चैतन्या। नमन, नमन करूँ नमो माँ धन्या॥८०

देवन पहले स्तुति मा कीन्ही। इच्छित फल उनने पा लीन्ही॥

इन्द्रराज सेवहिं वहु काला। कल्याणी हरे विपत्ति विशाला॥८१॥

हम सब दैत्यन खूब सताये। परमेश्वरि को शीश झुकाये॥

विनय शील नर सुमिरहिं आपा। विपति मिटाहिं दूर संतापा॥

देव कहहिं जगदम्बे भवानी। संकट दूर कहु निज जानी॥८२॥

**ऋषि कहते हैं॥८३॥**

देव स्तुति कर रहे जब राजन। पार्वती स्नान गंग जल पावन॥८४

सुन्दर भृकुटि माँ भगवती राजे। देवन से पूछहिं कहु काजे॥

**कस स्तुति मिलि के तुम करहीं।**

**प्रकटी शिवा, शरीर कोश, तवहीं॥८५॥**

शुम्भ दैत्य से भये तिरस्कृत। हारि निशुम्भ यहाँ एकत्रित॥

यह सब देव मम स्तुति करही। जय जय देवि नाद उच्चरही॥८६॥
पार्वती कोश प्रकट भई अम्बिका। कौशिकी नाम भयऊ जगदम्बिका॥
कौशिकी जब प्रकटी तत्काला। रूप पार्वती धरा तेहि काला॥
भई विख्यात कालिका माता। बसहिं हिमालय जो सुख दाता॥८८॥
तब वहाँ चण्ड मुण्ड दोऊ आवा। शुम्भ-निशुम्भ के भ्रात कहावा॥
रूप मनोहर पाय अभिलेखा। अति सुन्दरि अम्बिका को देखा॥८९॥
शुम्भ समीप गयऊ तत्काला। बोला बचन सुनहु महिपाला॥
स्त्री मनोहर एक वहाँ रहही। दिव्य प्रभा गिरि ज्योतित भयही॥९०॥
उत्तम रूप काहु नहिं देखा। जाँच करावहु, असुरेश्वर वेषा॥
दैवी कौन कहाँ से है आई। लीजे उसे हमें अस भाई॥९१॥
सर्वाङ्गी सुन्दर स्त्री रत्ना। अंग प्रभा लखि होय प्रसन्ना॥
दशो दिशा फैलहिं प्रकाशा। देखहुँ जाय हिमालय पासा॥९२॥
तीन लोक मणि हाथी न घोड़ा। रत्न सुशोभित गृह तव जोड़ा॥९३॥
रत्न ऐरावत हाथिन माहीं। पारिजात सब वृक्षन माही॥
उच्चैःश्रवा अश्वहिं पहिचाना। इन्द्रदेव सन पाय सुजाना॥९४॥
हंस युक्त विमान तव आँगन। शोभा पावत है असुरानन॥
अद्‌भुत यह रत्नभूत विमाना। ब्रह्मा से यहाँ लाए सुजाना॥९५॥
महापद्म निधि कुवेरहिं पाई। सागर किञ्जल्किनी माला पहुँचाई॥
केसर से शोभित तव माला। कमल न मुरझावहिं कई काला॥९६॥
वरुण क्षत्र स्वर्ण वर्षा करही। तव गृह शोभा पावत तवही॥
रथ जो प्रजापति के अधिकारा। आप समीप करहि उजियारा॥९७॥
उत्क्रान्तिदा शक्ति मृत्यु नामा। छीनी आपने अपने ही धामा॥
वरुण पाश, समुद्र सब रत्ना। निशुम्भ भ्रात आधीन यत्ना॥९८॥
स्वतः सिद्ध अग्नि द्वै वस्त्रा। तव सेवा में अर्पित करता॥९९॥
स्त्रिन रत्नरूप यह देवी। अधिकारी तुम ये हैं सेवी॥१००॥

**ऋषि कहते हैं॥ १०१॥**

चण्ड मुण्ड के वचनन सुनहिं। दैत्य सुग्रीव दूत भेजा तबहि॥
मम आज्ञा देविहि करि बाता। अस उपाय करहिं सम्वादा॥१०२॥
होय प्रसन्न देवी तव जाना। शीघ्र यहाँ आवहुँ तजि माना॥१०३॥
अति रमणीक जगह गयो दूता। हिम प्रदेश देवि रहहि पुनीता॥
दूत मधुर भाषी बड़बोला। अति कोमल वाणी में बोला॥१०४॥

**दूत बोला॥ १०५॥**

देवि सुनऊ! दैत्य शुम्भ है राजा। तीन लोक के वे महाराजा॥
मुझको अपना दूत बनाकर। तुमरे पास मैं पहुँचा आकर॥१०६॥
सकल देव मानहिं उन बाता। कोऊ उल्लङ्घन करि नहीं पाता॥
देव परास्त उनने सब कीन्हे। अब संदेश सुनहु जो दीन्हे॥१०७॥
तीन लोक का मैं अधिकारी। देव आधीन आज्ञा से हमारी॥
सकल यजन महिं भाग हमारा। अलग अलग भोगहुँ मैं सारा॥१०८॥
जो शुभ रत्न लोक त्रय होई। सबका मैं अधिकारी होई।।
इन्द्र वाहन ऐरावत हम छीना। सब गज रत्न पास रख लीना॥१०९॥
सागर मंथन उच्चैश्रवा पाया। देवन मिलि चरणन पहुँचाया॥११०॥
देव, गन्धर्व, नाग, रत्न जो होई। सुन्दरि! पास हमारे सोई॥१११॥
तुमही स्त्रीरत्न हो संसारा। देवि! ये मत सुनहु हमारा॥
आओ पास तुम जानि सुजाना। रत्न भोगी हमको सब माना॥११२॥
शुम्भ-निशुम्भ की सेवा स्वीकारो। रत्न स्वरूपा तव नैन पसारो॥११३
यदि तुम मेरा वरण करोगी। अतुल ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी॥
निज बुद्धि विवेक अपनाओ। तुम पत्नी मेरी बन जाओ॥११४॥

**ऋषि कहते हैं॥**

दूत वार्ता जब सुनी कल्याणी। भई गम्भीर मनहिं मुस्कानी॥
जगधारण जो करहि माता। दुर्गा बोली, सुनहु मम बाता॥११५॥

**देवी ने कहा॥**

दूत कहहु तुम साँची बाता। मिथ्या इसमें नहीं कछु ताता॥
शुम्भ भये त्रय लोकहि स्वामी। और निशुम्भ पराक्रमी नामी॥११८॥
किन्तु प्रतिज्ञा हमसे जो होई। मिथ्या कैसे करहु जो सोई॥
अल्प बुद्धि से सपथ ली जाना। उसे सुनावहु दूत सुजाना॥११९॥
विजयी जो हो करे संग्रामा। मम अभिमान चूर्ण करे वामा॥
मम समान बलवान जो होई। स्वामी जग में होगा वो ही॥१२०॥
शुम्भ-निशुम्भ दोऊ स्वयं ही आवें। जीतें मुझे वरहिं यश पावें॥
करहु देर नहीं बने स्वरूपा। मम संकल्प सुनावहि भूपा॥१२१॥

**दूत बोला॥**

दूत कहत देवी सन ऐसे। अहं भरी बातहिं करो कैसे॥
तीन लोक में नर कोऊ नाहीं। शुम्भ-निशुम्भ सन्मुख जो जाहीं॥१२३
अन्य दैत्य सम देव न लड़हीं। स्त्री रूप कैसे क्या करहीं॥१२४॥
इन्द्रादि देव युद्ध न हिं जावहि। शुम्भ दैत्य सन्मुख न पावहिं॥
तुम स्त्री का पाय शरीरा। सन्मुख जाओगी कैसे अधीरा॥१२५॥
कहा मान मम जाऊ उन पासा। तव गौरव रक्षित की आसा॥
केशहिं पकड़ घसीटहि तोही। खोय प्रतिष्ठा जाओगी सोही॥१२६॥

**देवी ने कहा॥**

कहहु ठीक तुम दूत सुजाना। दोई बलवान पराक्रमी माना॥
किन्तु करूँ क्या समझ न आई। पूर्व सपथ से सोच न पाई॥१२८॥
जो कुछ तुमसे कहा है भाई। सादर दैत्यराज सन गाई॥
अब जावहु तुम सुन मन माही। उचित होय सोई करहु जाही॥१२९

**॥पञ्चम अध्याय संपूर्ण॥**

# षष्ठ अध्याय

## धूम्रलोचन वध कथा

### ध्यान

सर्वेश भैरव अंक पाय पद्मावती रहे निशंकिका।
नागराज के आसन विराजे, फणिमणि माला सुशोभिका॥
रवि तेज सम ज्योति तुम्हारी, त्रयनेत्र आनन शोभहिं।
हस्त, माल, कमल कपाल, कुम्भ, अर्द्धचन्द्र मुकट मन मोहहिं॥

**ऋषि कहते हैं॥ १॥**

देवि कथन सुनि भयहु अमर्षा। दूत कहहुँ विस्तृत सब चर्चा॥ २॥
दैत्यराज भयो कोप अपारा। धूम्रविलोचन कहहि पुकारा॥ ३॥
सैन्य सहित जा करहु न देरा। केश पकड़ खीचहुँ मत मेरा॥ ४॥
यदि कहीं रक्षक पाओ ताता। मारहु तुरत अवसि जो आता॥
देव यक्ष होवे चाहे जोई। गन्धर्वादि बलवान हो कोई॥ ५॥

**ऋषि कहते हैं॥ ६॥**

साठ हजार असुरन के साथा। शुम्भ की आज्ञा को जब पाता॥
धूम्रविलोचन सैन्य सजावहिं। तुरत चले देविहिं पर जावहिं॥ ७॥

**देवी देखि हिमालय, चलो कहें ललकार।**
**शुम्भ-निशुम्भ आदेश है, नहीं खेचूँ तव भार॥**

देवी ने कहा॥ १०॥

दैत्यराज ने तुम्हहि पठावा। हो बलवान स्वयं अस भावा॥
सैन्य साथ लाये तुम भारी। खैचहुँ मोहि बलात लाचारी॥ ११॥

**ऋषि कहते हैं॥ १२॥**

सुना असुर देवी के बचना। सन्मुख आय रचहि कछु रचना॥
हुं शब्द अम्बिका उच्चारहिं। धूम्रलोचन भस्म हो जावहिं॥ १३॥
दैत्य सैन्य क्रोधहिं भरि भारी। फरसा तीर शक्ति सब डारी॥ १४॥
देख दशा सिंह क्रोध में भरही। देवी वाहन भयंकर गरजहीं॥
गर्दन बाल हिलहि जस काला। सैन्य मध्य कूदा तत्काला॥ १५॥
कछुक दैत्य पंजन सो पछाड़े। कई के जबड़े जाउ उखाड़े॥
महादैत्य भू पटके जो भारी। दाढ़ ओठ घायल करि डारी॥ १६॥
पैर अनेक फटे नख शेरा। सिर धड़ अलग कीन नहीं देरा॥ १७॥
भुजा काटि मस्तक कई काटे। रक्त पिया अरु उदर तब फाटे॥ १८॥
क्रोधित सिंह देवि बलशाला। असुर सैन्य सबहिं मार डाला॥ १९॥
देविहिं धूम्रलोचन कहुँ मारा। सकल सैन्य सिंह कीनी क्षारा॥ २०॥
धूम्रलोचन वध सुन जबहि। शुम्भ क्रोध भरि आवहिं तवहिं॥
दैत्यराज भयो क्रोध अपारी। कांपहि ओठ भयंकर भारी॥
चण्डमुण्ड आदेश तव दीन्हा। करहु युद्ध महादैत्य प्रवीना॥ २१॥
चण्ड मुण्ड दोऊ जल्दी जाना। सैन्य अपार संग ले जाना॥
केश पकड़ देविहि बतलाना। शीघ्र बाँधि के तुम ले आना।२२॥
लाने में संशय यदि हो ही। युद्ध अनेक रूप करो सो ही॥
अस्त्र शस्त्र सब आसुरी सेना। हत्या करहु सुनो मम बैना॥ २३॥
दुष्टा की हत्या हो जब ही। सिंह मरे जानहु जो तबही॥
अम्बिका बंधन होइए जाना। शीघ्र लोटि के तुम सब आना॥ २४॥

**॥षष्ठ अध्याय संपूर्ण॥**

# सप्तम अध्याय

## चण्ड मुण्ड का वध

### ध्यान

रत्न जड़ित सिंहासनहिं, शुक मधुर वाणि सुनावहिं।
तन श्याम मातंगी मनोहर, पद एक पद्म सुहावहिं॥
अर्धचन्द्र मस्तक राजता, गल माल वीणा वादिनी।
चोली सुशोभित अंग माता, लालरंग साड़ी साजिनी॥
है शंख हाथ ललाट विन्दी, शोभा कही न जात है।
है वदन मातु विराट जानो, छलकत मधु न समात है॥

**ऋषि कहते हैं॥ १॥**

शुम्भ कहा चण्ड-मुण्ड से जाई। चतुरंगिणी सैन्य लो भाई॥ २॥
स्वर्णिम हिमगिरि शिखर चढ़ाई। सिंह असवार देवि वहाँ पाई॥ ३॥
कछुक धनुष, कछु असि धारी। देविहि पकड़न आये असुरारी॥ ४॥
शत्रुन पर कीन्हा अति क्रोधा। मुख श्यामल देवि भयो क्रोधा॥ ५॥
भृकुटि बक्र दीखहिं बिकराला। काली प्रकट भयहिं तत्काला॥
हाथ पाश धारण किये माता। तीव्र धार तलवार लिये धाता॥ ६॥

खट्वाङ्ग विशेष देवी ने धारा। साड़ी चीता चर्म अपारा॥
शुष्क मांस तन, नर मुण्ड माला। ढाँचा अस्थि भयंकर काला॥७॥
मुख विशाल, लपलपाये जिह्वा। लाल आँख क्रोधहिं धसी गुहया॥
आकृति देखि डरहि सब सेना। दशो दिशा गुंजारहिं अहिना।८॥
दैत्य विशाल, वधहि माँ काली। भक्षण सेना करहि कराली॥
अंकुशधारी महावत रक्षक। आसपास रह योधा भक्षक॥
हाथी अनेक घण्ट एक हाथा। भक्षहिं, मुख डालहिं एक साथा॥१०॥
रथी सारथी रथ और घोड़ा। मुख में रखकर देत मरोड़ा॥११॥
पकड़हिं केश गला दवावहिं। रौंदहिं पैर ढकेल के मारहिं॥१२॥
अस्त्र शस्त्र जो असुर चलावहिं। मुख सों पकड़ पीस तब डारहिं॥१३
दैत्य बली सेना रौंद डाली। मारा कछुक खा गई काली॥१४॥
कछु मारे तलवार से वीरा। पिटे खट्वाङ्ग से भये अधीरा॥
असुर अनेक गये जब मारे। कुचले अग्रदंत्त बेचारे।१५॥
सकल सैन्य असुरन संहारी। रौद्र रूप देवी भई भारी॥
यह सब देखि चण्ड अति घोरा। अति वेगहिं काली पर दौड़ा॥१६॥
बाण वर्षा मुण्ड तब कीन्हा। सहस्रचक्र आच्छादित कीन्हा॥१७॥
चक्र अनेक देवी मुख जावहि। सूर्यमण्डल मेघन डर पावहिं॥१८॥
गर्जना कीन्ह भयानक काली। अट्टहास विकट, विकराली॥
मुख छवि कठिन परत लखाई। दंत्त प्रभा अति उज्ज्वल पाई॥१९॥
ले तलवार विशालहिं हाथा। 'हं' हुँकार चण्ड किया माथा॥
दौड़ी केश पकड़ लिए माता। मस्तक विलग पड़ा तब जाता॥२०॥
मृत्यु चण्ड की देखहिं ताता। देवी ओर दौड़ा कहे भ्राता॥
क्रोधित देवि मुण्ड कहुँ मारा। घायल कर धरती पहि डारा॥२१॥
चण्ड मुण्ड दोऊ पराक्रमी जोधा। मरे देवि सन कीन्ह विरोधा ॥
बची सैन्य सोचहिं ऐहि भाँती। भगी चतुर्दिशि प्राण बचाती॥२२॥

दोऊ मस्तक काली ले हाथा। अट्टहास करे चण्डिका माता॥ २३॥

चण्ड-मुण्ड पशु दोऊ संहारे। स्वीकारो माँ भेंट तुम्हारे॥

युद्ध यज्ञ आगे जो होई। शुम्भ-निशुम्भ वध करना सोई॥ २४॥

**ऋषि कहते हैं॥ २५॥**

चण्ड-मुण्ड दोऊ दैत्य बलवाना। तुम लाई हो मम स्थाना॥

कल्याणक चण्डी लखि दोऊ। मधुर बचन काली कहुँ तोऊ॥ २६॥

चण्ड-मुण्ड लाई मम पासा। चामुण्डा नाम से हो विख्याता॥ २७॥

**॥सप्तम अध्याय संपूर्ण॥**

शिक्षा ऊँची पाय के, उन्नति के खुले द्वार।
सद्विचार आये नहीं, तो होगा ना उद्धार॥
प्यार और सहकार से, जहाँ न होता काम।
वे ही घर हैं बन रहे, आज नरक के धाम॥

# अष्टम अध्याय

## रक्तबीज वध

### ध्यान

अणिमादि सिद्धि अनन्त जानहि, किरण से आवृत बनी।
है लाल रंग शरीर कान्ति, नेत्र करुणा सुहावनी॥
है पाश हस्त विराजता, अंकुश लिए तेजश्विनी।
वाणों की शक्ति अपार है, धनु मातु हस्त सुशोभिनी॥

**ऋषि कहते हैं॥ १॥**

मरे दैत्य दोऊ जब जाना। चण्ड मुण्ड थे अति बलवाना॥
सैन्य अधिक भई नष्ट सुजाना। अतिक्रोधित शुम्भ तब जाना॥ २॥
जो जो दैत्य सैन्य में रहहीं। करहुँ कूँच मम आज्ञा सुनहीं॥ ३॥
उदायुध नामक छियासी नायक। युद्ध हेतु चालहु सब सायक॥
चौरासी दैत्य कम्बु महा नायक। वाहन घिरे चलहु सब धायक॥ ४॥
पचास कोटिवीर्य कुल सैनिक। चलहि धौम्रकुल के शत सैनिक॥ ५॥
दौर्हद, मौर्य और कालक जोई। असुर कालकेय आज्ञा तोई॥ ६॥
असुरराज शुम्भ है भयकारी। बड़ी सैन्य ले युद्ध हितकारी॥
सैन्य भयानक देखहिं आता। चण्डिका घोर कीन ऐहि भाँता॥ ७॥

धनु टंकार कीन्ह अस घोरा। मध्य भाग पृथ्वी नभ छोरा॥
देवि सिंह तब करहिं दहाड़ा। घण्ट शब्द ध्वनि कीन्ह अपारा॥८॥
सिंह दहाड़, धनुष टंकारा। कांपहि दिशा, घण्ट ध्वनि भारा॥
काली विकराल मुखहि ध्वनि कीन्हा। भयी विजयिनी तव रिपु चीन्हा॥
दैत्य सैन्य सुन नाद अति घोरा। चहु ओर से डाला डोरा॥
चण्डिका देवी सिंह, लेत मरोरा। काली देवी पर क्रोध न थोरा॥११॥
राजन! तत्क्षण असुर विनाशिनि। देवों के हित अति सुख दायिनि॥
ब्रह्मा विष्णु शिव षडानन देवा। देव शक्ति बल से करि सेवा॥१२॥
देव शरीर प्रकटी तत्काला। चण्डिका पास गई तेहि काला॥१३॥
देव रूप, वेशभूषा, वाहन। असुर युद्ध हित था आवाहन॥१४॥
प्रथम शक्ति ब्रह्मा की आई। हंस विमान शोभा अधिकाई॥
अक्षसूत्र और कमण्डलु धारी। ब्रह्माणी ब्रह्म शक्ति अपारी॥१५॥
महादेव की शक्ति अपारा। वृषभारूढ़ त्रिशूलहिं धारा।
महानाग कङ्कण अति शोभा। आई चन्द्ररेख सिर शोभा॥१६॥
कार्तिकेय शक्ति जगदम्बा माता। मोर सवार शक्ति की दाता॥१७॥
विष्णु शक्ति गरुड़ है आसन। शंख,चक्र, गदा, धनु खड्ग हाथन॥
यज्ञ शक्ति श्री हरि के साथा। वाराह शरीर धरि आई माता॥१८॥
नारसिंहीं शक्ति आयी तब काला। नृसिंह रूप धारी तत्काला॥
गरदन बाल हिलहिं अस होहीं। नभ तारे विखरहिं ज्यों सोहीं॥२०॥
एरावत गज कीन्ह सवारी। इन्द्राणी वज्र हाथ में धारी॥
नेत्र सहस्त्र शोभित सुखकारी। इन्द्र रूप सम शौर्य खरारी॥२१॥
देव शक्ति सन हम घिर कहही। शीघ्र नाश शत्रुन तुम करहीं॥
तव महादेव कहहि सुनि माता। होऊ प्रसन्न मो पर सुखदाता॥२२॥
तव देवी भयो रूप भयानक। चण्डिका उग्र शक्ति की नायक॥
सहस्त्र गीदड़ सम करहिं चिक्कारा। देविहिं बोल, भयंकर उचारा॥२३

अपराजिता देवी शिव कहहीं। दूत होय शुम्भ-निशुम्भ पे जहहीं॥ २४
बड़े घमण्डी दानव दोऊ। शुम्भ निशुम्भ नामक हैं सोऊ॥
अन्य दैत्य जो युद्धरत होऊ। मम संदेशा प्रभु उन कहऊ॥ २५॥
जीवित लौट जाओ पाताला। दैत्यो! सुख चाहो ऐहिकाला॥
तीनलोक राज इन्द्र जो पावहिं। देवहिं यज्ञ भाग सुख पावहिं॥
बलहिं घमंड युद्ध यदि करहीं। मांस खाय योगिनी तृप्त भयहीं॥ २७॥
शिवदूती नाम भई विख्याता। शिवहिं दूत घोषित करि माता॥ २८॥
महादैत्य सुनि मुख शिव वाणी। भरे क्रुद्ध कात्यायनी जानी॥ २९॥
तव दैत्यन क्रोधहिं उत्कर्षा। बाण, शक्ति, ऋष्टि अस्त्रहि वर्षा॥ ३०॥
खेल खेल कीन्ह धनुषटंकारा। बाण अनेक छाँड़ि कीन्ह वारा॥
दैत्य बाण, शूलन निस्तारा। अस्त्र शस्त्र सब क्षीण करि डारा॥ ३१॥
सन्मुख काली फिरहिं कई वारा। शत्रुन पर करे शूल प्रहारा॥
करहिं विदीर्ण खट्वाङ्ग चलावहिं। युद्ध कचूमर घूमि निकालहिं॥ ३२
ब्रह्माणी दौड़हिं जस ओरा। शत्रुन तेज घटहिं तस थोरा॥
अभिसिंचन जल करहिं कमण्डल। नष्ट पराक्रम होय सभी बल॥ ३३
माहेश्वरी त्रिशूल चलावा। वैष्णवी चक्रहिं तीव्र घुमावा॥
कार्तियेक शक्ति क्रोध में भरहिं। दैत्यन का संहार करहिं॥ ३४॥
इन्द्रशक्ति किया वज्र प्रहारा। दानव शत मरि वहे रक्त धारा॥ ३५॥
थूथुन मारि वाराही कीन्ही। दाड़न नोक छाती छिन कीन्हीं॥
दैत्य अनेक मारे युद्ध घोरा। चक्रहि चोट खा करहिं शोरा॥ ३६॥
नारसिंही नख करे विदीर्णा। महादैत्य खावहिं नवीना॥
दशों दिशा में करहिं सिंह नादा। नभ गूँजहि, विचरहि आजादा॥ ३७॥
अट्टहास शिवदूती जब करहीं। असुर अनेक भयानक डरहीं॥
भू पर गिरे आय रिपु जबही। ग्रास बनें शिवदूती के तबही॥ ३८॥
मातृगणन क्रोधित जब देखा। असुर भृत्य भागहि सैन्य रेखा॥ ३९॥

पीड़ित दैत्य पलायन जानी। रक्तबीज दैत्य क्रोधरण आनी॥४०॥
रक्तबूँद जब भू पर गिरहिं। तव समान दैत्य रूप अवतरहिं॥४१॥
रक्तबीज महा असुर रणधीरा। इन्द्रशक्ति से युद्ध करि वीरा॥
हाथ गदा और शक्ति अपारा। ऐन्द्री वज्र रक्तबीजहि मारा॥४२॥
अधिक रक्त वहे बीज शरीरा। प्रकटे योद्धा जैसा था वीरा॥
बूँद अनेक रक्त तन होई। निर्मित भये पुरुष जस होई॥
रक्तबीज सम वीर्य सुजाना। पराक्रमी अति थे बलवाना॥४४॥
उदित रक्त सन दैत्य सब लड़हिं। घोर युद्ध मातृगणों से करहिं॥४५॥
वज्र प्रहार रक्त जब बहहि। कोटि पुरुष तव पैदा भयहिं॥४६॥
चक्र प्रहार वैष्णवी कीन्हा। गदा चोट महादैत्य पे कीन्हा॥४७॥
घायल भयहु चक्र से जबहि। रक्त वहा शरीरहि तवहि॥
सहस्र दैत्य प्रकटे आकारा। सकल जगत ले शक्ति अपारा॥४८॥
शक्ति कौमारी, खड्ग वाराही। माहेश्वरी निज त्रिशूल चलाही॥
रक्तबीज को घायल कीना। तीनों ने मिलि के दुःख दीना॥४९॥
महादैत्य कोप करहि अपारा। सब शक्तिन पर गदा प्रहारा॥५०॥
घायल भयहु शक्ति और शूला। बार अनेक कष्ट सह झूला॥
रक्त धार पृथ्वी पर गिरहिं। असुर सेकड़ों पैदा भयहिं॥५१॥
असुर प्रकट व्यापे सब लोका। हुए सभीत देव तेंह शोका॥५२॥
देव उदास भये इहि जाने। चण्डिका शीघ्र काली पै आने॥
चामुण्डे! सुनि लो मम वाता। निज मुख को फैलाओ माता॥५३॥
रक्तबिन्दु जो गिरहिं शस्त्रपाता। दैत्यन मुख में खाओ कर त्राता॥५४॥
महादैत्य भक्षण तुम करहुँ। रण में विचरण करती रहहु॥
दैत्य रक्त जब कम हो जाई। स्वयं नष्ट तब वह हो जाई॥५५॥
दैत्य भयंकर भक्षण करहीं। नूतन असुर प्रकट कस भयहीं॥
काली सन अस बचन सुनाये। रक्तबीज क्षण बार गिराये॥५६॥

रक्त बूँद काली मुख लीन्हा। गदा प्रहार चण्डिका पर कीन्हा॥५७॥

गिरत रक्त को मुँह में डाला। महादैत्य प्रकटे तत्काला॥

काली दैत्यन चट कर गयी। खून बीज का सब पी गयी॥

वज्र, समूह असि ऋष्टि सारा। रक्त बीज का किया संहारा॥

शस्त्र समूह आहत तब भहहि। रक्तहीन बीज भू पर गिरहि॥

राजा सुनो देव सुखी अपारा। महादैत्य से भयो छुटकारा॥६२॥

असुर रक्त मातृगण किया पाना। हो उन्मुक्त नृत्य करें सुजाना॥६३॥

**॥अष्टम अध्याय संपूर्ण॥**

नहीं किसी का ध्यान है, पैसा ही बना प्रधान।
पैसे से ही सब जगह, हो रही खींचमतान॥

सबसे अच्छा मनुज तन, मिला सहज तू जान।
इसका कर सदुपयोग नर, तू है बड़ा महान्॥

# नवम अध्याय

## निशुम्भ वध

### ध्यान

अर्धनारीश्वर प्रभु की शरण में मैं आयहु।
बन्धूक फूल के रंग सम स्वर्ण रक्तपीत जानहु॥
भुज अक्षमाल, पाशधारी वरदमुद्रा में धारण करे।
अर्धचन्द्र आभूषण बना, त्रय नेत्र शोभित हैं करे॥

**राजा ने कहा॥ १॥**

रक्तबीज वध की जो कहानी। देवि चरित्र अद्‌भुत मैं जानी॥ २॥
शुंभ निशुम्भ किया क्या करना। मैं चाहूँ अब प्रभु से सुनना॥ ३॥

**ऋषि ने कहा॥**

राजन्! दैत्य बीज सब मरहिं। शुम्भ-निशुम्भ वहु क्रोधी भयहिं॥ ४॥
सैन्य विशाल भरी जब जानी। दौड़ निशुम्भ देवी सन आनी॥
संग प्रधान सैन्य ले आगे। सबहिं क्रोध भरि चालन लागे॥ ६॥
कछु आगे कछु पीछे दौड़े। पार्श्व भाग में असुर बड़े-बड़े॥
ओठ चवावहि करहिं क्रोधा। देवी मारन आये जोधा॥ ७॥
शुम्भ सैन्य संग पहुँचा जाई। मातृगण त्याग चण्डिका लड़ाई॥ ८॥

घोर संग्राम देवी सन करहीं। शुम्भ निशुम्भ न मन में डरही॥
बाण वृष्टि दोई मिलिके करहीं। मेघ समान गति से बढ़हीं॥९॥

**दैत्य चलाये बाण दोऊ, दीन चण्डिका काट।**
**शस्त्र सघन वर्षा करी, अंगन क्षति पहुँचात॥ १०॥**
**तेज तलवार निशुम्भ ली, हाथ ढाल चमकात।**
**देविहिं वाहन सिंह के, मस्तक कीन्ह आघात॥ ११॥**

क्षतिग्रस्त वाहन जब देखा। बाण क्षुरप्र असि मेटी रेखा॥
निशुम्भ ढाल अष्ट चन्द्र जड़ाई। देविहि खण्ड खण्ड करि जाई॥१२
असि और ढाल कटी जब जाना। शक्ति भयंकर छाड़ि अभिमाना॥
सम्मुख आवत देखी जबही। चक्र चलाय दो टूकहि करहीं॥१३॥
तब निशुम्भ अति क्रोधित भयहु। देवी मरहिं त्रिशूल ले गयहु॥
देवि समीप आवत जब देखा। मुक्का मारि चूरण कर फेंका॥१४॥
गदा घुमाय चलावहिं तबहि। भस्म त्रिशूलहिं देवी करहिं॥१५॥
तब निशुम्भ फरसा ले हाथा। अवनि सुलाय बाण वहु साथा॥१६॥
धराशायी निशुम्भ जब जाना। अम्बिका वध हित आगे आना॥१७॥
रथ आसीन अष्ट भुजाधारी। आयुध लिये सुशोभित भारी॥
अनुपम भुजाएँ छाई अकाशा। शोभा अद्भुत शब्द न पासा॥१८॥
आवत देखा देवहिं जबहि। शंख बजाय प्रत्यञ्चा करहिं॥१९॥
घण्ट शब्द सैनिक तेज नासा। सकल दिशा गूँजित भय पासा॥२०॥
सिंह दहाड़ सुनहिं गजराजा। मद हो चूर सुनहिं जो आवाजा॥
पृथ्वी और आकाश हि कांपहि। दसो दिशा गुंजित हो काँपहि॥२१॥
तब काली उछली आकाशा। करि आघात लेत उष्ण श्वासा॥
शब्द भयंकर हुआ तब भारी। पूर्व शब्द आबाज न भारी॥२२॥
दैत्य अमंगल अट्टहास करहि। शिवदूती बल से सब डरही।
कांपहिं असुर सुनहिं अस घोरा। शुम्भ क्रोध कीन्हहि तब सोरा॥२३॥

शुम्भहि लक्ष्य कहहि देवी माँ। खड़ा रह, खड़ा रह जाय कहाँ॥
देव आकाश खड़े कहे माता। जय हो जय शत्रुन की त्राता॥२४॥
ज्वाल शक्ति आ शुम्भ चलावा। अति भयानक जैसे आवा॥
अग्निमय गिरि देखा जबहि। देवी दूर लूके सन करहिं॥२५
शुम्भ नाद गूँजहिं त्रैलोका। प्रति ध्वनि राजन्! होवहिं शोका॥
वज्रपात सम शब्द भयंकर। सब शब्दों को जीता अन्दर॥२६॥
शुम्भ बाण देवी पर चलावहिं। देवी बाण शुम्भहिं पर डारहि॥
शत, सहस्र टुकड़न भये बाणा। नष्ट हुए आपस टकराना॥२७॥
क्रोधित भई चण्डिका जबही। शुम्भ शूल से मारा तबही॥
शूल लगत रिपु मूर्च्छित भयही। गिरा धरा पर आके तबही॥२८॥
निशुम्भ चेतना जागी जबही। धनुष हाथ ले दौड़ा तबही॥
वाणन वर्षा करहि विशाला। तीनों को घायल कर डाला॥२९॥
दस हजार भुज लीन्ह बनाई। दैत्यराज चक्र चलावहि जाई॥
देविहिं आच्छादित तब कीन्हा। कष्ट अनेक बार रिपु दीन्हा॥३०॥
दुर्गम पीड़ा नाशय दुर्गा। काटहि चक्र बाण करि उत्सर्गा॥३१॥
चण्डिका वधहि गदा ले दौड़ा। दैत्य निशुम्भ सैन्य को जोड़ा॥३२॥
आवत चण्डी कीन्ह तव वारा। तेज धार तलवार अपारा॥
गदा शीघ्र काटहिं जब जाता। ले त्रिशूल आयहि तव साथा॥३३॥
देवन पीड़ित करहिं निशुम्भा। शूल हस्त ले देखा अम्बा॥
वक्षस्थल छेदा निज शूला। वेग चलाय शक्ति अनुकूला॥३४॥
हुआ विदीर्ण शूल से जबही। वक्ष निकल कहता असभयी॥
महापराक्रमी, बली तब बोला। रहो खड़ी कहता वह डोला॥३५॥
देवी सुना पुरुष तब निकला। ठहाके मार देवी हँसी विकला॥
खड्ग हाथ लीनी तत्काला। धड़ से मस्तक काटि भू डाला॥३६॥
सिंह दाड़न से असुर दबावहि। गर्दन कुचल खान तब लागहि॥

काली, शिवदूती भयकारी। दैत्य अनन्त खाय दोऊ भारी॥ ३७॥
भये विदीर्ण कौमारी शक्तिधारा। महादैत्य नष्ट हुये अपारा॥
जल निस्तेज मन्त्र से होई। ब्रह्माणी डर भागे सोई॥ ३८॥
दैत्य अनेक माहेश्वरी मारा। छिन्न भिन्न त्रिशूल करि डाला॥
वाराही सन मरे अनेका। पाआघात थूथुन के लेखा॥ ३९॥
कई टुकड़े वैष्णवी करि डाले। ऐन्द्री वज्र से प्राण हर डाले॥ ४०॥
कछुक नष्ट हो गये असुरारी। भागे युद्ध छाँड़ि कर भारी॥
काली शिवदूती कछु मारा। सिंह ग्रास बनि मरे अपारा॥ ४१॥

**॥ नवम अध्याय संपूर्ण॥**

श्रेष्ठ विचार चिन्तन करो, देते शक्ति महान्।
खोलें प्रगति द्वार ये, पाये प्रभु अनुदान॥
दुष्कर्मों के जाल में, मत पड़ रे इंसान।
नर जीवन दुर्लभ मिला, रखना इसका ध्यान॥

# दशम अध्याय

## शुम्भ-वध

### ध्यान

मस्तक पे चन्द्र विराजता, शिव शक्ति रूप अनूप है।
कामेश्वरी माँ भगवती, चिन्तन हृदय तव अनुरूप है॥
सोना तपे छवि निखरती, तीन नेत्र आभा पात हैं।
रवि चन्द्र अग्नि सम लखे, महिमा कही न जात है॥
धनु बाण, अंकुश को लिए, दोऊ हाथ मात विराजहिं।
पाश, शूल, दोनों में धरे, मन मोहक छवि राजहिं॥

**ऋषि कहते हैं॥ १॥**

प्रिय भ्राता निशुम्भ मृत जाना। सकल सैन्य मरि अस अनुमाना॥
भयऊ कुपित शुम्भ तव भयहु। दुर्गासन बोलत अस कहहु॥ २॥
बल अभिमान प्रपंच दिखावा। व्यर्थ घमंड तुम्हें नहीं भावा॥
बड़ मानिनी बनी तू दुर्गा। वहु स्त्रिन बल ले उत्सर्गा॥ ३॥

**देवी बोली॥ ४॥**

दुष्ट! अकेली मुझको जानो। मुझसे अलग न जग को मानो॥
देखो सकल विभूतिहिं मेरी। जो प्रवेश कर रही घनेरी॥ ५॥

तब ब्रह्माणी आदि सब देवी। लीन शरीरहि अम्बिका देवी॥

एकहि रूप भयहु तब माता। नाम अम्बिका जग भयो ताता॥६॥

**देवी बोली॥७॥**

मम ऐश्वर्य युक्त विधि रूपा। सब समाप्त अब किये अनूपा॥

युद्ध अकेली स्थित मम जानो। तुम भी स्थिर निज को मानो॥८॥

**ऋषि कहते हैं॥९॥**

देवी शुम्भ युद्ध करे भारी। देव दनुज दोऊ देखि अपारी॥१०॥

तेज शस्त्र, बाण वर्षा होई। दारुण अस्त्र चलावहि दोई॥

दोऊ विच युद्ध हो रहा भारी। सभी प्रतीत होत भयकारी॥११॥

अस्त्र सैकड़ों छांडहि माता। दैत्यराज काटहिं जब ताता॥१२॥

दिव्यास्त्र शुम्भ चलाये नाना। शब्द हुँकार से नाश तब जाना॥१३॥

आच्छादित देवी करि बाणा। क्रुध देवि धनु काटहिं बाणा॥१४॥

दैत्यराज शक्ति ले हाथा। देवी शक्ति चक्र काटहिं साथा॥१५॥

दैत्य स्वामी तब ली कर ढाला। चमके शतचन्द्र जस आला॥

हाथ तलवार शुम्भ तव लीना। देवि पर धावा कर दीना॥१६॥

आवत देखि चण्डिका जबहिं। निज धनु छाड़े बाणहिं तबहिं॥

सूर्यकिरण सम उज्ज्वल ढाला। असि काटी निज शक्ति विशाला॥१७॥

दैत्य अश्व सारथि कहुँ मारा। उसने मुद्गर कीन्ह प्रहारा॥१८॥

तीक्ष्ण बाण से मुद्गर काटा। मुक्का दैत्य तान कीन कराटा॥१९॥

देवी की छाती मुक्का मारा। देवी ने चाँटा दिया करारा॥२०॥

थप्पड़ खाय गिरा धरती पर। पूर्ववत खड़ा हुआ हिम्मतकर॥२१॥

उछल देविहि संग पहुँच आकाशा। बिन आधार देवी लड़हिं ले आशा॥

दैत्य देवि युद्ध करहिं अपारा। सिद्ध मुनिन मन विस्मय भारा॥२३॥

अम्बिका शुम्भ लड़े अति देरा। घुमाके शत्रु भू पटक न देरा॥२४॥

पटकी खाय पुनि कर तैयारी। चण्डिका वध हित दौड़ा भारी॥२५॥

दैत्यराज शुम्भ आवत देखहिं। वक्ष छेद पृथ्वी पर फैंकहिं॥ २६॥
प्राण पखेरु उड़े दैत्यराजा। त्रिशूलहिं घायल कीन्ह युवराजा॥
सकल समुद्र, द्वीप गिरि काँपे। भू पर गिरत दिशा सब काँपे॥ २७॥
दुरात्मा मरण सकल जग जाना। भये प्रसन्न मनहिं मन माना।
पूर्ण स्वस्थ समझहिं सब कोई। आकाश स्वच्छ दीखई तब सोई॥ २८

**उत्पात सूचक मेघ जो,करते उल्का पात।**
**सभी हो गये शान्त तब, दैत्य मृत्यु के बाद॥**
**नदियाँ बहती ठीक न, उनने बदली चाल।**
**दैत्य भय से मुक्ति भई, हुआ स्वभाविक हाल॥ २९॥**

तत्क्षण देव सबहिं सुख भारा। मधुर गीत गन्धर्व पुकारा॥
ढोल बजावहि गावहिं गंधर्वा। अप्सरा नाच करहिं मिलि सर्वा॥ ३०
पावन वायु वहहिं सब ओरा। सूर्य प्रभा भई उत्तम भोरा॥ ३१॥
बुझी आग, यज्ञशाला जलहिं। शब्द शांत सब दिशि में भयहिं॥ ३२॥

**॥दशम अध्याय संपूर्ण॥**

मेहनत धन अर्जित करो, वो ही आवे काम।
मुफ़्त माल पाकर सदा, मिलता कहाँ विश्राम॥

नास्तिक कोई है नहीं, आस्था ही झलकाय।
जड़ चेतन सब दीखते, प्रकृति पुरुष ही भाय।

# एकादश अध्याय

## देवताओं द्वारा देवी की स्तुति तथा देवी द्वारा देवताओं को वर प्रदान

### ध्यान

श्री अंग की शोभा निरखि, आभा उदित ज्यों भानु की।
मस्तक मुकुट छवि देखि, चन्द्र समान है आन की॥
स्तन उभार हैं मातु के, त्रय नेत्र दृश्य अपार हैं।
मुस्कान मुख पर छा रही, अंकुश और पाश अपार हैं॥
भुवनेश्वरी का ध्यान है, मैं प्राणपण से जोह रहा।
हाथों से तुम वरदायिनी, अभय मुद्रा शोभित हो रहा॥

**ऋषि कहते हैं॥ १॥**

महादैत्य शुम्भ गया जब मारा। देवी सन हुआ जब संहारा॥
कात्यायनी स्तुति देव करहिं। अग्नि देव की साक्षी रहहिं॥
अभीष्ट पाय कमल मुख दमकहिं। सकल दिशा जगमगावे तवहिं॥ २
देव करहिं, पीड़ा हरो माता। सकल जगत की हो तुम त्राता॥
विश्वेश्वरि, विश्व कर रक्षा। अधीश्वरी चराचर करे सुरक्षा॥ ३॥
एकमात्र जग की आधारा। पृथ्वी रूप स्थिति तब धारा।
पराक्रम उलङ्घन करहिं न तुम्हारा। जल से तृप्ति करउ जग सारा॥ ४॥

अतुलित बल वैष्णवी शक्ति रूपा। कारण भूत परा माया रूपा॥
मोहित सकल जगत तुम कीन्हा। तुम प्रसन्न, मोक्ष भू पर दीन्हा॥५॥
देवि, विद्या सब तेरे स्वरूपा। स्त्री सकल तव मूर्ति के रूपा॥
विश्व व्याप्त कर राखा माता। परावाणी, क्या स्तवन भाता॥६॥
सर्वरूप, स्वर्ग, मोक्ष प्रदाता। तव स्तुति क्या होय न माता॥७॥
बुद्धिरूप सब हृदय निवासिनि। स्वर्ग मोक्षदा नमन नारायणि॥८॥
कला काष्ठा रूप धरि माता। जो परिणाम पाय सुख दाता॥
सकल विश्व संहारक जानी। नमस्कार हम करें नारायणी॥९॥
मंगलमयी सब मंगलदायनि। शिवा तुम्हीं कल्याण प्रदायिनि॥
सब पुरुषार्थ सिद्धि की दायनि। शरणागतवत्सल सुखदायनि॥
नेत्र तीन शोभहिं शुभ आननि। गौरी नमन करहिं नारायणि॥१०॥
सृष्टि की तुम पालनहारी। संहारक शक्ति अति भारी।
शक्ति भूति सर्वगुणी सनातनि। नमस्कार हम करहिं नारायणि॥११॥
दीन दुःखी शरणागत आवहिं। संरक्षण, जब तुमरो पावहिं॥
सब की पीड़ा हरई भवानी। नमस्कार हम करें नारायणि॥१२॥
नारायणि तुमहिं ब्रह्माणी। हंस युक्त विमान की धारिणी॥
कुश–मिश्रित जल का करे सिंचनि। नमस्कार हम करहिं नारायणि॥
माहेश्वरी त्रिशूल धरि हाथा। सर्प, चन्द्र शोभहि तव माथा॥
बैल पीठ बैठी है भवानी। नमस्कार हम करें नारायणि॥१४॥
मुर्गे मोर रहहिं चहु ओरा। महाशक्ति धारहु यश तोरा॥
तुम निष्पाप कौमारी रूपधारिणि। नमस्कार हम करें नारायणि॥१५॥
शंख, चक्र, अरु गदा ले साथा। शार्ङ्गधनुष धरहिं निज हाथा।
उत्तम आयुध की तुम धारिणि। नमस्कार हम करें नारायणि॥१६॥
महाचक्र कर में तुम धारिणि। दाड़ों से पृथिवी को धारिणि।
वाराणी रूप तव है कल्याणि। नमस्कार हम करें नारायणि॥१७॥

रूप भयानक नृसिंह तुम धारा। सकल दैत्य वध को तैयारा॥
त्रिभुवन रक्षा करहु भवानी। नमस्कार हम करें नारायणि॥ १८॥
माथे किरीट हाथ वज्र धारी। सहस्र नयन उज्ज्वल तेजधारी॥
इन्द्र शक्ति वृत्रासुर हारिणि। नमस्कार हम करें नारायणि॥ १९॥
दैत्य सैन्य संहारिणि माता। शिव दूती का स्वरूप विख्याता॥
रूप भयंकर और विकट गरजनि। नमस्कार हम करें नारायणि॥ २०॥
दाड़ों से विकराल मुखवाली। मुण्डमाला शोभहिं अति आली॥
चामुण्डा तुम ही मुण्डमर्दिनी। नमस्कार हम करें नारायणि॥ २१॥
तुम लक्ष्मी, लज्जा, पुष्टि रूपा। विद्या, श्रद्धा, स्वधा, ध्रुवा अनूपा॥
महारात्रि, अविद्या, स्वरूपिनि। नमस्कार हम करें नारायणि॥ २२॥
मेधा, सरस्वती, वरा भूतिरूपा। वाभ्रवी, तामसी है तव रूपा॥
नियता, ईशा, अधीश्वरी रूपिणि। नमस्कार हम करें नारायणि॥ २३॥
सर्वेश्वरी रूप बहु धारी। सर्वशक्ति दिव्य रूप दुर्गा भारी॥
तुम रक्षक तुम हो भय हारिनि। नमस्कार हम करें नारायणि॥ २४॥
त्रय लोचन शोभा मुख भारी। भय से रक्षा करहु हमारी॥
रक्षक हो तुम माँ कात्यानि। नमस्कार हम करें नारायणि॥ २५॥
ज्वाल विकराल भयानक रूपा। भद्रकाली संहार स्वरूपा॥
तव त्रिशूल भय करे निष्कानि। नमस्कार हम करें नारायणि॥ २६॥
जो ध्वनि सकल जगत् में व्यापी। दैत्यन तेज नाश ह्वै जाती॥
तव घण्टा पापों को हरहीं। माता बालक पालन करहीं॥ २७॥
खड्ग हाथ शोभित चण्डिके माँ। असुर रक्त चर्बी चर्चित जहाँ॥
हम सबका मंगल करो माता। नमन कर रहे तुम ही त्राता॥ २८॥
जब प्रसन्न नाशहिं सब रोगा। कुपित होई वांछित काम भोगा॥
तुमरी शरण गहे जो कोई। मुक्ति विपति से पाये सोई॥
तव शरणागत जावे जोई। शरण प्रदाता कहिये सोई॥ २९॥

रूप अनेक देवि तुम धारे। धर्मद्रोही महादैत्य संहारे॥
तुम बिन कौन करे अब माता। अम्बिके तुम हो जग विख्याता॥३०॥
ज्ञान ज्योति विद्या जस पावा। वेद शास्त्र तव वर्णन आवा॥
तुमहिं छाड़ि कस शक्ति जग होई। ममता गर्त भटकावहि सोई॥३१॥
राक्षस, सर्प विष युक्त जहाँ पे। शत्रु, लुटेरे दावानल वहाँ पे॥
सागर वीच सहयोगी जहाँ। रक्षा विश्व की करहु तहाँ॥३२॥
विश्वरूपा विश्व पालन करहि। सकल विश्व को धारण करहिं॥
विश्वनाथ वंदनीय आश्रयदाता। जो भी मस्तक तुम्हें झुकाता॥३३॥
असुर मारि सब की रखवारी। हो प्रसन्न, देवि भव भय हारी॥
सकल जगत के पाप हरो माता। महापातक क्षय करो जगत्राता॥३४॥
चरण शरण में पड़े तुम्हारी। पीड़ा दूर माँ करो हमारी॥
हो प्रसन्न त्रयलोक निवासनि। हमको वर देना भयनाशनि॥३५॥

**देवी बोली॥३६**

स्वीकारो मम वर तुम देवा। मन भावे सो लीजे सेवा॥
जग हित जो कल्याणक होई। वह वर मुझसे पावऊ सोई॥३७॥

**देवता बोले॥३८**

तीन लोक की वाधा हरहुँ। हमरे शत्रु नाश अब करहुँ॥३९॥

**देवी बोली॥४०**

वैवस्वत मन्वन्तर अठ्ठाईस। शुम्भ-निशुम्भ दो दैत्य पैदाईस॥
देव सुनो मेरी अस बाणी। ये दोई अन्य दैत्य अभिमानी॥४१॥
नंद गोप गृह तब मैं जाई। यशोदा के गर्भ में प्रकटाई॥
विन्ध्याचल जाकर मैं रहहुं। शुम्भ-निशुम्भ का नाश मैं करहुँ॥४२॥
तव अति रूप भयंकर धरहिं। पृथ्वी पर अवतार मैं लहहिं।
वैप्रचित नामक दानव होंई। उन सबका वध करहु मैं सोई॥४३॥
महादैत्य भक्षण क्षण भारा। रक्त पुष्प मम दंत अनारा॥४४॥

देव स्वर्ग, जन मर्त्य लोकहिं। रक्तदन्तिका कह स्तुति करहिं॥४५॥
फिर जल न बरषहि सत वर्षा। जल बिन न होवे उतकरषा॥
तब सब मुनि मिलि स्तुति करहिं। अयोनिजा रूप ले भू प्रकटहिं॥४६॥
तब शत नेत्र मुनिन को देखहुं। शताक्षी नाम जन कीर्तिन करहुँ॥४७॥
मम शरीर शाक पैदा भयहुँ। सकल जगत का पोषण करहुँ॥
वर्षा भू पर होये जब तक। शाक प्राण रक्षक हो तब तक॥४८॥
अस कारण शाकम्भरी नामा। मम ख्याति भू हो विश्रामा॥
दुर्गम महादैत्य वध करहिं। मम अवतार नाम सब कहहिं॥४९॥
दुर्गा देवी मम नाम प्रसिद्धा। दैत्य मार्ग सब हों अवरुद्धा॥५०॥
भीम रूप धारण मैं करहुँ। मुनियन की रक्षा मैं करहुं॥
राक्षस भक्षण करहु हिमालय। स्तवन करहि सकल मुनि पालय॥५१
भीमादेवी मम नाम कहें तबहिं। अरुण दैत्य त्रयलोकहि डरहिं॥५२॥
तीन लोक हित कारण तबहिं। षट पद धारणि करु जबहिं॥
भ्रमर असंख्य रूप मैं धारहिं। महादैत्य को तब मैं मारहिं॥५३॥
तव क्षण मोहि भ्रामरी कहहिं। दिशा चार मम स्तुति करहिं॥५४॥
जब जब दानव वाधा करहिं। तब तब आ शत्रुन संहरहिं॥५५॥

**॥एकादश अध्याय संपूर्ण॥**

# द्वादश अध्याय

## देवी चरित्र के पाठ का माहात्म्य

### ध्यान

छवि ध्यान में दुर्गा तुम्हीं, तीन नेत्र तव अभिराम है।
विद्युत समान सुअंग राजे, शेर कांधे तव आयाम है॥
असि ढाल हाथो धारती, कन्या सुसेवहिं मात है।
हैं चक्र गदा पास तेरे, धनु पाश मातु सुहात है॥
है तर्जनी मुद्रा बनाये, बाण धारण कर रही।
अग्नि समान रूपधारी, सिर चन्द्र मुकुट सोहहीं॥

**देवी बोली॥ १॥**

मम स्तवन करहि चितलाई। बाधा सकल मिटावहु ताई॥ २॥
मधुकैटभ की मृत्यु कहानी। वध महिषासुर किये अभिमानी॥
पाठ करे जो मृत्यु प्रसंगा। शुम्भ-निशुम्भ विदारे अंगा॥ ३॥
आठे नौमि चतुर्दशी तिथियाँ। श्रवण माहात्म्य करे जो मनियाँ॥ ४॥
पाप लगे न उनको कोई। पाप जनित दुःख दूरही होई॥
गृह दारिद्र न आवे कोई। प्रिय विछोह कष्ट व्याप्त न सोई॥ ५॥
राजा, शत्रु, दस्यु भय भागे। जो देवी के चरणन लागे॥

शस्त्र, आग से हानि न होई। जल से अभय रहे सब कोई॥६॥
अस मन जानि श्रद्धा से जोई। भाव भक्ति मय होकर वोई॥
सुने माहात्म्य पाठ करे कोई। हो कल्याण सदा जन सोई॥७॥
यह माहात्म्य मैटहिं छूत रोगा। दैविक आध्यात्मिक भौतिक भोगा॥
सब उत्पात शान्त ह्वै जाई। भक्त पायें सुख, ध्यान जो लाई॥८॥

**मम मंदिर पूजन करे, पाठ करे धरि ध्यान।**
**रहुँ सदा जाके वहाँ, राखूँ उनका मान॥**

यज्ञ, बलि पूजन क्षण जोई। शुभ अवसर महोत्सव होई॥।
मम चरित्र सम्पूर्ण जो गावहिं। श्रवण करे मन में हरषावहिं॥१०॥
ऐसा करे मनुज विधि जाना। या होवे कोई अनजाना॥
जो बलि, यजन पूजन करहीं। ग्रहण करूँ प्रसन्नचित भयहीं॥११॥
जो वार्षिक महा पूजा होई। शरद ऋतु में करते सोई।
तब अवसर माहात्म्य जो सुनहिं। बाधा मुक्त प्रसाद सन होहहिं॥१२॥
पुत्र धन धान्य आदि सुख पावा। निसंदेह शरणागत आवा॥१३॥
मम प्राकट्य, माहात्म्य जो सुनहिं। युद्ध कथा सुनि निर्भय भयहिं॥१४
श्रवण माहात्म्य करें जो कोई। शत्रु नष्ट होवहिं जग सोई॥
हो कल्याण सहज ही उनका। आनन्दित हो कुल मन तन का॥१५॥
सकल शान्ति कर मन में जबहि। बुरे स्वप्न दीखहिं यदि तबहि॥
गृह क्लेश भयानक होई। सुने माहात्म्य ध्यानधरि जोई॥१६॥
सकल विघ्न ग्रहपीड़ा नाशहिं। स्वप्न अशुभ शुभ भय हो जावहिं॥१७

**ग्रहों से पीड़ित बाल जो, शान्ति माहात्म्य से पात।**
**मानव दल की फूट भी, माहात्म्य से मिटि जात॥१८॥**

दुष्ट दुराचारी बल काटे। पाठ करे या सुने मन माटे॥
भूत राक्षस पास न आवत। नष्ट पिशाच स्वयं हो जावत॥१९॥
मम माहात्म्य मम साक्षी दाता। पशु पुष्प, अर्घ्य धूप दीपवाता॥

ब्रह्मभोज, यज्ञ पूजन करहिं। नित अभिषेक जो भोग लगावहिं॥ २०॥
दान करे एक वर्ष तक पूजा। होंऊँ प्रसन्न मो सन न दूजा॥ २१॥
उत्तम चरित करहिं एक बारा। पाप हरहुँ सुख देहुँ अपारा॥ २२॥
मम प्राकट्य कीर्तन करहिं। भूतों से वो रक्षित वरहिं।
युद्ध विषय चरित्र सुने जोई। दुष्ट दैत्य को मारहि सोई॥ २३॥
सुने इसे जो भी नर नारी। शत्रुन भय न व्यापै भारी॥
सकल देव ब्रह्मर्षिन जोई। मम स्तुति करहिं सब कोई॥ २४॥
जो दावानल से घिर जाई। निर्जन मार्ग या वन पाई॥
ब्रह्मा जी जब स्तुति करहीं। सद्बुद्धि कल्याणक करहीं॥ २५॥
वीहड़ जगह लुटेरे नाना। पकड़े शत्रु कभी स्थाना।
सिंह, व्याघ्र जंगल के जीवा। हाथिन के पीछे सहजीवा॥ २६॥
कुपित नृपहि जब वध आदेशा। बन्धन स्थल पहुँचें कर वेशा॥
यात्रा नाव बैठे महासागर। डगमगाइ नाव भँवर में आकर॥ २७॥
युद्ध शस्त्र वरषहिं जब भारी। वेदना से पीड़ित नर नारी॥
अन्य प्रकार विपत्ति जो होई। स्थिति भयानक जानहि सोई॥ २८॥

**सुमिरन करे चरित्र का, संकट कटता तात।**
**हिंसक होय अहिंसक, दुष्ट सभी भग जात॥ २९॥**

**ऋषि कहते हैं॥ ३०॥**

अस कहि वीर चण्डिका देविहिं। हुई अदृश्य देव कहें सबहिं॥ ३१॥
अभय देव, शत्रुन मृत जाने। नियमित यज्ञ करे पूर्व माने॥ ३२॥
देव! शत्रुन जग नाशहि कीन्हा। शुम्भ-निशुम्भ महापराक्रमी चीन्हा॥
युद्ध बीच देवी दोऊ मारा। बचे जो दैत्य पाताल सिधारा॥ ३३॥
नित्य निरंजन अम्बिका स्वरूपा । जग रक्षार्थ प्रकटे कई रूपा॥ ३४
विश्व को वो ही मोहित करहीं। जग उत्पत्ति सहित तुम करहीं॥ ३५॥
होऊ संतुष्ट विनय तव करहीं। ज्ञान विज्ञान समृद्धि से भरहीं॥ ३६॥

महा प्रलय-क्षण महामारी रूपा। ब्रह्माण्ड महाकाली का स्वरूपा॥ ३७

महामारी फैले जब जबही । स्वयं अजन्मा प्रकटहु तबही॥ ३८॥

तुम्हीं सनातनी देवी स्वरूपा। सकलभूत रक्षक अनुकूला॥

जन उत्थान समय घर माही। उन्नति करहु श्री रूप में आही॥ ३९॥

दरिद्र रूप अभाव में होई। कारण बने विनाश का सोई॥ ४०॥

**पुष्प धूप और गंध से। पाठ पूजन कर तात।**

**संतति धन सद्बुद्धि मा। उत्तम गति पा जात॥ ४१॥**

**॥द्वादश अध्याय संपूर्ण॥**

कुरीतियों को छोड़ दो, दुःख की हैं आगार।
इनसे मुक्ति पाय जो, धन्य वही नर-नार॥

घर में सब जिम्मेदार हों, हिलमिल के करे काम।
आस्था का माहौल हो, सुख हो आठोयाम॥

# त्रयोदश अध्याय

## सुरथ और वैश्य को देवी का वरदान

उदित रवि मण्डल छटा जब, चहु ओर फैलत जावहिं।
है नेत्र तीन तेजस् भरे, चार भुजा शोभा पावहिं॥
हस्त पाश अंकुश मातुके, वर मुद्रा रूप धारिणी।
धरता हूँ तेरा ध्यान माँ, तुम शिवा शक्ति प्रदायिनी॥

**ऋषि कहते हैं॥ १॥**

ऋषि कहहिं राजन सन वाणी। देवी माहात्म्य तव हेतु वखानी॥
जग को धारण करहिं भवानी। तस प्रभाव देविहिं का जानी॥ २॥
विद्या पैदा करहिं वह माता। विष्णु की माया स्वरूपा त्राता।
तुम और वैश्य अन्य जन मोही। मोहित हुये आगे भी होहीं॥ ३॥
हे महाराज सुनो मम वानी। परमेश्वरी शरण ही पानी॥ ४॥
जो आराधन करहि माता। स्वर्ग, भोग और मुक्ति प्रदाता॥ ५॥

**मार्कण्डेय कहते हैं॥ ६॥**

मेधा मुनि को वचन सुनि, ऋषि को कीन्ह प्रणाम॥ ७॥
उत्तमव्रती महाभाग थे, मार्कण्डेय वचन अभिराम॥
अपहृत राज्य से खिन्न सुजाना। अति ममता उनके मन जाना॥ ८॥

**राजा वैश्य मुक्ति भई। तप को गये तट साथ।**

**जगदम्बा दर्शन किये, तपें झुकावें माथ॥ ९॥**

देवी सूक्त जप तप लगे दोऊ। मूर्ति देवि तट निर्मित सोऊ॥

धूप दीप फूल नैवेद्य चढ़ावहिं। तर्पण यज्ञ आराधन लागहिं॥ १०॥

प्रथम आहारहिं को कम कीन्हा। निराहार रह अति तप कीन्हा॥

मन लगाय देविहिं सन जाना। चिन्तन निशिदिन करहिं सुजाना।११॥

दोऊ निज रक्त बलि को देहीं। तीन वर्ष तप नियमित सेहीं॥ १२॥

तव प्रसन्न भई जगतधारिणी। दीन्ह दरस प्रत्यक्ष कृपालिनी॥ १३॥

**देवी बोली॥ १४॥**

देविहि कहहिं सुनो प्रिय राजन्। निज कुल सुख कि चाह महाजन॥

जो कछु इच्छा होय तुम्हारी। हूँ प्रसन्न माँगो हितकारी॥ १५॥

**मार्कण्डेय उवाच॥ १६॥**

दूसर जन्म राज्य तब माँगा। नाश न होये माँ मम भागा॥

अबहि सैन्य शत्रुन जय पाई। मिले राज्य तुम मातु वरदाई॥ १७॥

वैश्य चित्त संसार विरुद्धा। मनहि विरक्ति चाहते शुद्धा॥

मिटे आसक्ति ज्ञान देहु माता। ममता अहं न होवहि त्राता।१८॥

**देवी बोली॥ १९॥**

देवी कहहिं सुन राजन बचना। शत्रु मारि निज राज्य कर रचना॥ २०

अब तुम राज्य शीघ्र ही करही। राजन् स्थिर होगे जबही॥ २१॥

मृत्यु बाद फिर जन्म लो ताता। सूर्य के अंश से हो विख्याता॥ २२॥

सावर्णिक मनु भू पर कहहिं। सकल जगत् में प्रसिद्धि भयहिं॥ २३॥

वैश्य श्रेष्ठ! वर तुमने माँगा। पूरण करहुँ इच्छित तव भागा॥ २४॥

मोक्ष प्राप्ति हित जो तुम चाहो। वही ज्ञान पाकर सुख पाहो॥ २५॥

**मार्कण्डेय उवाच॥ २६॥**

मन वांक्षित वर पाये दोऊ। भाव भक्ति से स्तुति करें सोऊ॥ २७॥

सुनी प्रार्थना अम्बिका माता। हुई तुरत अदृश्य जग त्राता॥ २८॥

क्षत्रिय श्रेष्ठ सुरथ पा वरदाना। सावर्णि नाम मनु भये सुजाना॥

**॥त्रयोदश अध्याय संपूर्ण॥**

शादी की बर्बादी लखि, मन में दुःख अपार।
देखा देखी मत करो, बिगड़े सब संसार॥

सूख गई संवेदना, नहीं किसी को ध्यान।
लोक दिखावा कर रहे, करते निज पहिचान॥

सत्य का मुख है ढक दिया, स्वर्ण पात्र से आज।
लोग भ्रमित सब हो रहे, भ्रष्टाचार का राज॥

कहने सुनने में नहीं, होता कभी सुधार।
जीवन में धारण करे, होवे जग उद्धार॥

# क्षमा याचना

त्रुटियों का आगार हूँ, क्षमा की तुम हो खान।
मैं बालक नादान हूँ, तुम्ही हो शक्तिमान॥ १॥
मंत्र नहीं मैं जानता, क्रिया विधि से हीन।
भक्ति की पूँजी नहीं, बालक हूँ अति दीन॥ २॥
दीन दयालु आप हो, याद करूँ दिन रात।
दया भक्त पर कीजिए, पाठ हो आत्मसात॥ ३॥
पूजा तेरी कठिन है, मैं हूँ अतिशय अज्ञान।
बेड़ा पार लगाओ माँ, करो दास कल्यान॥ ४॥
पाठ करन की रीति क्या, क्या है विधि विधान।
चरणन में अर्पित करूँ, श्रद्धा फूल अरु पान॥ ५॥
मंगल करती भक्त का, मंगला है तव नाम।
क्षमा करो जगदम्बिके, चरण शरण दो धाम॥ ६॥
जो भी श्रद्धा भक्ति से, पाठ करे मन लाय।
कृपा तुम्हारी पाय वो, आत्मिक शक्ति पाय॥ ७॥

# श्री अम्बे माताजी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी।

तुमको निसिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी॥१॥ जय अम्बे०

माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को।

उज्ज्वल से दोउ नैना, चंद्र बदन नीको॥२॥ जय अम्बे०

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।

रक्तपुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै॥३॥जय अम्बे०

केहरि वाहन राजत, खड़ग खप्पर धारी।

सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुःखहारी॥४॥ जय अम्बे०

कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती।

कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति॥५॥ जय अम्बे०

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।

धूम्र विलोचन नैना निसिदिन मदमाती॥६॥ जय अम्बे०

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।

मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥ जय अम्बे०

ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी।

आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी॥८॥ जय अम्बे०

चौंसठ योगिनि गावत नृत्य करत भैरूँ।

बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू॥९॥ जय अम्बे०

तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।

भक्तन की दुःख हरता सुख सम्पत्ति करता॥१०॥ जय अम्बे०

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्राधारी।

मन वाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी॥११॥ जय अम्बे०

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।

श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति॥१२॥ जय अम्बे०

श्री अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावै।

कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै॥१३॥जय अम्बे०

## लेखक परिचय

**नाम** श्री फूलचन्द्र शर्मा

**जन्म** 27 जुलाई 1938

**स्थान** मु०पो० बहजोई, जिला-मुरादाबाद, उ०प्र०

**शिक्षा** प्रारम्भिक से इंटर 1960 तक बहजोई

संस्कृत काशी की प्रथमा परीक्षा 1954

भारतीय विद्या भवन बम्बई, संस्कृत भाषा परिचय

कला I.G.D. Bombay, Arts Diploma, 1959

S.G.D. Final Diploma, Allhabad, 1960

* राष्ट्रभाषारत्न – राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, 1966
* आयुर्वेद रत्न हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 1972
* D.N.Y.S अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद्, नई दिल्ली 2003.

Member of Ayush Medical Association, New Delhi

Member of International Naturopathy Org., New Delhi

* दिल्ली विश्वविद्यालय– कला स्नातक 1970
* National Council for Rural Higher Education, 1961 Certificate in Sanitary Inspector's course
* Department of Industries U.P. (Electrician) 1959

**सेवाकार्य** सन् 1964 से परम पू० गुरुदेव के मिशन में मथुरा से जुड़ा, 1 अप्रैल 1971 में महीदपुर ( उज्जैन ) म०प्र० सिटी में गुरुजी से दीक्षा ली। नवम्बर 1961 से 1985 तक राजस्थान चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में निरीक्षक पद पर कार्य किया। स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति लेकर 1 अप्रैल 1985 से 2001 जून तक का समयदान शान्तिकुंज, हरिद्वार को दिया।

रामगंजमंड़ी, कोटा की मातृशक्ति स्मारिका, बकानी एवं झालावाड़ में जागृति स्मारिका, 2006 में सम्पादन, सहयोग एवं लेखन। गुरुसत्ता की सूक्ष्म प्रेरणा से कविता दोहे रूप में आरम्भ हुई, परिणामत: प्रकाशित हुई पुस्तकें 1. सत्यनारायण की प्रेरक कथा, 2. गीता-ज्ञानामृतम्, 3. अंक तत्त्व दर्शन, 4. सुख-शान्ति के सूत्र, 5. दुर्गा-सप्तशती पारायण, 6. यज्ञ पद्धति।

**सम्पर्क सूत्र** १) श्री वीरेन्द्र शर्मा, श्रद्धा आयुर्वेद केन्द्र, 8/483, राजीव कोलोनी, गली नं० 6, सुभाष नगर, बरेली-243001 (उ. प्र.), दूरभाष - 09411469277/09359107397

२) श्री ज्ञानप्रकाश गौतम, श्रद्धा आयुर्वेद केन्द्र, गायत्री नगर, झालावाड़, ( राज. ), दूरभाष - 09414420807/09414751727